Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا
فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى
الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: हे हमारे रब्ब हमारे गुनाह क्षमा कर दे और अपने मामला में हमारी ज़्याजती भी और हमारे कफिर क़ौम के मुकाबला में सहायता प्रदान कर।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 45

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

9 रबीउल अव्वल 1441 हिजरी कमरी 7 नबुव्वत 1398 हिजरी शमसी 7 नवम्बर 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

तुम लोग एक इस तरह के व्यक्ति के साथ सम्बन्ध रखते हो जो अल्लाह की तरफ से मामूर है

अत: उस की बातों को दिल की कानों से सुनो और उस पर अनुकरण करने के लिए सदैव तय्यार हो जाओ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हमारी जमाअत को उचित है कि व अख़लाक़ी तरक़्क़ी करें।

अत: हमारी जमाअत को उचित है कि व अख़लाक़ी तरक़्क़ी करें। क्योंकि اَلْاِسْتِقَامَةُ فَوْقَ الْكَرَامَةِ अल-इस्तिक़ामतो फ़ौक़ुल करामते मशहूर है। वे याद रखें कि अगर कोई उन पर सख़्ती करे तो यथा सम्भव उस का जवाब नरमी और प्रेम से दें। मार पीट और जबर की ज़रूरत इंतिक़ामी तौर पर भी ना पड़ने दें।

इन्सान में नफ़्स भी है और इस की तीन किस्म हैं। अम्मारा, लव्वामह, मुत्मइन्नह। अम्मारा की हालत में इन्सान जज़बात और व्यर्थ के जोशों को सँभाल नहीं सकता और अन्दाज़ा से निकल जाता और अख़लाक़ी हालत से गिर जाता है मगर लव्वामह की अवस्था में सँभाल लेता है। मुझे एक हिकायत याद आई जो सादी ने बोस्तान में लिखी है कि एक बुज़ुर्ग को कुत्ते ने काटा। घर आया तो घर वालों ने देखा कि उसे कुत्ते ने काट खाया है। एक भोली-भाली छोटी लड़की भी थी वह बोली आपने क्यों ना काट खाया? उसने जवाब दिया बेटी! इन्सान से कुतपन नहीं होता। इसी तरह से इन्सान को चाहिए कि जब कोई बुरा गाली दे तो मोमिन को अनिवार्य है कि बचे। नहीं तो वही कुतपन का उदाहरण चरितार्थ आएगी। ख़ुदा के मुक़र्रिबों को बड़ी बड़ी गालियां दी गईं। बहुत बुरी तरह सताया गया मगर उनको اَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ (अल-अराफ़:200) का ही ख़िताब हुआ। ख़ुद इस इन्सान कामिल हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बहुत बुरी तरह तकलीफ़ें दी गईं और गालियां , बदज़बानी और शोख़ियाँ की गईं मगर इस साक्षात आचरण वाले ने इस के मुक़ाबला में क्या किया। उनके लिए दुआ की और चूँकि अल्लाह तआला ने वादा कर लिया था कि जाहिलों से मुंह फेर लेगा तो तेरी इज़्ज़त और जान को हम सही तथा सलामत रखेंगे और ये बाज़ारी आदमी इस पर हमला ना कर सकेंगे! अत: ऐसा ही हुआ कि हुज़ूर के विरुद्ध आपकी इज़्ज़त पर अपमान ना ला सके और ख़ुद ही ज़लील तथा अपमानित हो कर आपके क़दमों पर गिरे या सामने तबाह हुए। अत: ये लव्वामह की सिफ़त है जो इन्सान कश्मकश में भी सुधार कर लेता है। दैनिक की बात है अगर कोई जाहिल या उज्जड़ गाली दे या कोई शरारत करे जिस क़दर इस से बचोगे उतनी ही इज़्ज़त बचा लोगे और जिस क़दर इस से मुठभेड़ और मुक़ाबला करोगे तबाह हो जाओगे और ज़िल्लत ख़रीद लोगे। नफ़्स मुतमइन्ना की हालत में इन्सान की आदत भलाइयां और ख़ैरात हो जाता है। वह दुनिया और अल्लाह के अतिरिक्त चीज़ों से पूर्ण रूप से अलग हो जाता है। वह दुनिया में चलता फिरता और दुनिया वालों से मिलता-जुलता है लेकिन हक़ीक़त में वह यहां नहीं होता। जहां वह होता है वह दुनिया और ही होती है। वहां का आसमान और ज़मीन और होती है।

जमाअत अहमदिया के लिए महान बिशारत

अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ (आले इम्रान:56) यह तसल्ली प्रदान करने वाला नासिरा में पैदा होने वाले इब्न मरियम से हुआ था मगर मैं तुम्हें बशारत देता हूँ कि यसूअ मसीह के नाम से आने वाले इब्न मरियम को भी अल्लाह तआला ने इन्हीं शब्दों में सम्बोधित कर के बिशारत दी है। अब आप सोच लें कि जो मेरे साथ सम्बन्ध रखकर इस महान वादा और महान बशारत में शामिल होना चाहते हैं क्या वे वे लोग हो सकते हैं जो अम्मारा के स्तर में पड़े हुए दुराचार की राहों पर चलने वाले हैं? नहीं, हरगिज़ नहीं। जो अल्लाह तआला के इस वादा की सच्ची क़दर करते हैं और मेरी बातों को क़िस्सा कहानी नहीं जानते तो याद रखो और दिल के कानों से सुन लो। मैं फिर एक बार उन लोगों को सम्बोधित कर के कहता हूँ कि जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हैं और वे सम्बन्ध कोई साधारण सम्बन्ध नहीं बल्कि बहुत ज़बरदस्त सम्बन्ध है और ऐसा सम्बन्ध है कि जिसका प्रभाव मेरी ज़ात तक और ना सिर्फ मेरी ज़ात तक बल्कि इस हस्ती तक पहुंचता है जिसने मुझे भी उस सम्मान्नीय इन्सान कामिल की ज़ात तक पहुंचाया है जो दुनिया में सच्चाई और सत्य की रूह लेकर आया। मैं तो यह कहता हूँ कि अगर इन बातों का असर मेरी ही ज़ात तक पहुंचता तो मुझे कुछ भी अंदेशा और फ़िक्र ना था और ना इनकी परवाह थी मगर इस पर बस नहीं होती। इस का असर हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़ुद ख़ुदा तआला की सम्मान्नीय ज़ात तक पहुंच जाता है। अत: ऐसी अवस्था और हालत में तुम ख़ूब ध्यान देकर सुन रखो कि अगर इस बशारत से हिस्सा लेना चाहते हो और इस के मिस्दाक़ होने की आरज़ू रखते हो और इतनी बड़ी कामयाबी (कि क़यामत तक मुकफ़्फ़रीन पर ग़ालिब रहोगे) की सच्ची प्यास तुम्हारे अंदर है तो फिर इतना ही मैं कहता हूँ कि यह कामयाबी उस वक़्त तक हासिल ना होगी जब तक लव्वामा के दर्जा से गुज़र कर मुत्मइन्नह के मीनार तक ना पहुंच जाओ।

इस से अधिक और मैं कुछ नहीं कहता कि तुम लोग एक ऐसे आदमी के साथ सम्बन्ध रखते हो जो अल्लाह की तरफ से मामूर है। अत: उस की बातों को दिल के कानों से सुनो और इस पर अमल करने के लिए सदैव तैयार हो जाओ। ताकि इन लोगों में से ना हो जाओ जो इक़रार के बाद इनकार की गन्दगी में गिर कर सदैव का अज़ाब ख़रीद लेते हैं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 87 से 89)

☆ ☆ ☆

जलसा सालाना कादियान के बारे में एलान

दिसम्बर 2019 ई में आयोजित होने वाले जलसा सालाना कादियान के बारे में अख़बार बदर कादियान में ऐलान होता रहा है कि यह जलसा 125वां जलसा सालाना है। इस तारीख़ी जलसा के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कुछ विशेष प्रोग्रामों की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई है जिस की सूचना सर्कुलर के द्वारा जमाअतों को दी गई है। इसी दौरान' तारीख़ अहमदियत कादियान विभाग''की तहक़ीक़ की रोशनी में सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल की सेवा में यह सूचना दी गई कि 2019 ई में आयोजित होने वाला जलसा सालाना 125 वां जलसा सालाना नहीं बल्कि126 वां जलसा सालाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शफ़क़त करते हुए इस की मन्ज़ूरी प्रदान फ़रमाई और प्रोग्रामों को भी जारी रखने का आदेश फ़रमाया है। बदर के पाठक सूचित रहें।

(नाज़िर इस्लाहो इरशाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-14)

हर ख़ुत्बा के बाद इस में से सवाल तय्यार कर के लजना को दें, नेशनल लेवल पर भी करें और लोकल मज्लिसों में भी करें

पहले वे सवाल ख़ुद पढ़ें और फिर इन सवालों को फ़ैमिली मैंबर्ज़ के साथ डिस्कस करें।

सीकरेट्रियात तजनीद को चाहिए कि वे घर-घर जाकर तजनीद के बारे में से मालूमात लें, तजनीद का काम grass root level पर होना चाहिए।

औरत तो दूसरी औरत के घरों के अंदर भी जा सकती हैं जबकि मर्द घरों के अंदर नहीं जा सकते, इसलिए लजना के पास तजनीद के बारे में से ज़्यादा मालूमात होनी चाहिऐं।

सीकरेट्रियात तजनीद हों या किसी भी और विभाग की कोई सेक्रेटरी हूँ अगर वह काम करने वाली नहीं हैं और अपनी ज़िम्मेदारी अदा नहीं कर रहीं तो आपके पास अधिकार है कि ऐसी सीकरेट्रियात को तबदील कर दें और उनकी जगह ऐसी लजना को लेकर आएं जो काम करने वाली हों, कम से कम आपके पास मालूमात तो पूरी हूँ।

रीजनल सदर उनका अपने अपने रीजन की सारी लजना मैंबर्ज़ के साथ सम्पर्क होना चाहिए

अगर नई आने वाली सदर लजना आप में से किसी को विभाग की सेक्रेटरी नहीं बनातीं तो आपके दिल में किसी किस्म का द्वेष नहीं होना चाहिए।

नेशनल मजलिस आमला लजना इमाउल्लाह अमरीका की सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग और हुज़ूर अनवर की सुनहरी नसीहतें।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

31 अक्तूबर2018 ई (दिनांक बुध)

नेशनल आमिला लजना इमाउल्लाह अमरीका की सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मीटिंग

आज प्रोग्राम के अनुसार नेशनल मजलिस आमला लजना इमाउल्लाह यू. ऐस. ए की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ साढ़े छः बजे मीटिंग रुम में तशरीफ़ लाए और नेशनल मजलिस आमला लजना इमाउल्लाहह यू एस ए की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग शुरू हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और मीटिंग का आरम्भ हुआ।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने जनरल सेक्रेटरी लजना इमाउल्लाह से पूछा कि कुल कितनी मज्लिसें हैं? और क्या सारी मज्लिसों अपनी मासिक रिपोर्टस भिजवाती हैं? इस पर जनरल सेक्रेटरी ने निवेदन किया कि कल 74 मज्लिसें हैं और अल्हम्दुलिल्लाह सारी मज्लिसें अपनी रिपोर्टस बाक़ायदगी से भिजवाती हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि इन मज्लिसों की रिपोर्टस पर फीडबैक कौन देता है? के बारे में विभाग की सेक्रेटरी फीडबैक देती हैं या सदर साहिबा? इस पर जनरल सेक्रेटरी ने निवेदन किया कि के बारे में विभाग की सेक्रेटरीज़ भी और सदर साहिबा भी फीडबैक देती हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सदर साहिबा ने निवेदन किया कि उनका दफ़्तर तो वहां मौजूद है लेकिन वह घर से ही काम करती हैं। लेकिन जब प्रोग्रामों इत्यादि का आयोजन होता है तो उस वक़्त दफ़्तर का प्रयोग होता है। और नायब सदर भी ऑफ़िस में काम करती हैं।

*सेक्रेटरी शिक्षा ने अपने विभाग की रिपोर्ट देते हुए निवेदन किया कि क़ुरआन करीम में हम सूरत अन्निसा पढ़ रहे हैं और आधा रुक अनुवाद के साथ पढ़ा जाता है। नाज़रा को बेहतर करने के लिए भी काम हो रहा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी शिक्षा ने बताया कि हम ने कशती नूह को निसाब में रखा है। इज्लासों में भी इस के हिस्से पढ़े जाते हैं। एक इम्तिहान भी रखा हुआ है जिस में 64 प्रतिशत लजना शामिल होती हैं। सेक्रेटरी शिक्षा ने निवेदन किया कि इस महीना हमने क़ुरआन का शाब्दिक अनुवाद भी शुरू किया है। यह हमने अल्इस्लाम वेबसाइट से लिया जो कि अन्सारुल्लाह यू के ने तय्यार किया था। यह बहुत लाभदायक है।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तरबियत से पूछा कि उनका साल का क्या मन्सूबा है और अब तक इस में कितनी कामयाबी हुई है? इस पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि हम वर्क बुक पर काम कर रहे हैं जिस में हर महीना विभिन्न निबन्ध होते हैं। इन निबन्धों में शादी, बच्चों की तरबियत, माली क़ुर्बानी का महत्व , नमाज़ और इस्तिक़ामत इत्यादि के निबन्ध शामिल होते हैं। इस के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बों को सुनने की तरफ़ ध्यान दिलाने के लिए भी ख़ास कोशिश कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि कुछ ख़ुत्बों इत्यादि को डिस्कस भी करते हैं? सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि जी हुज़ूर कुछ मज्लिसों में अपने प्रोग्रामों में डिस्कशन भी करती हैं, कुछ ख़ास पवाइटनस लेकर इस पर बात करती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने पूछने फ़रमाया कि आप हर ख़ुत्बा के बाद इस में से सवाल तय्यार कर के लजना को देती हैं? इस पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि कुछ मज्लिसों में लोकल स्तर पर सवाल तय्यार होते हैं लेकिन अभी तक नेशनल लेवल पर हमने शुरू नहीं किए। लेकिन नेशनल लेवल पर भी किया जा सकता है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: नेशनल लेवल पर भी करें और लोकल मज्लिसों में भी करें। पहले वे सवाल ख़ुद पढ़ें और फिर इन सवालों को फ़ैमिली मैंबर्ज़ के साथ डिस्कस करें। सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि इसके अतिरिक्त हम बच्चों की तरबियत पर भी ध्यान दे रहे हैं। इस बारे में से हमने पिछले साल एक किताब तय्यार की है। फिर माताओं से सीधा सम्पर्क करके भी बच्चों की तरबियत और विशेष रूप से नमाज़ के स्थापना के बारे में से ध्यान दिलाया जाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी तरबियत ने बताया कि हमने नमाज़ के बारे में से सर्वे किया है कि कुल कितनी लजना नमाज़ बाक़ायदगी से अदा करती हैं। सर्वे के अनुसार 6 हज़ार में से 4100 लजना का जवाब आया था और उनमें से 80 प्रतिशत लजना नमाज़ अदा कर रही हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि यह

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आख़िरत की फ़िक्र तब ही हो सकती है जब ख़ुदा तआला की ज़ात पर पूर्ण यक़ीन हो।

अक़्लमंद इन्सान वही है जो अस्थाई चीज़ को स्थायी चीज़ पर क़ुर्बान कर दे।

ज़ाहिरी ख़ौल ना हो बल्कि रूह हो,सार हो।

आख़िरत की फ़िक्र और अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखने वाला सबसे पहले अपनी इबादत की हिफ़ाज़त की तरफ़ ध्यान करता है।

निर्धारित समय पर नमाज़ पढ़ा जाना ज़रूरी है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि सिर्फ इस मस्जिद में नमाज़ के लिए खड़े हो जिसकी बुनियाद तक़्वा पर है।

हक़ीक़ी आबिद हर किस्म की नेकियों को अपनाने की कोशिश करता है।

आपस के सम्बन्धों में जो ख़ुदा तआला के लिए मुहब्बत और नरमी का सुलूक करने वाले हैं वही हक़ीक़ी तक़्वा पर क़ायम हैं

शराइते बैअत पर सच्चाई से क़ायम रहने और उनके अनुसार अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारने की नसीहत।

इस ख़ुत्बा जुमा के साथ सत्ताईसवें जलसा सालाना फ़्रांस का उद्घाटन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 4 अक्तूबर 2019 ई. स्थान - जलसा गाह जमाअत अहमदिया फ़्रांस, (तग़ी शाहू), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आपका जलसा सालाना शुरू हो रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा को ख़ालिस धार्मिक इज्तिमा का नाम प्रदान फ़रमाया है। अत: इस में शामिल होने वाले हर शख़्स पर यह वाज़िह होना चाहिए कि धार्मिक, इलमी और रुहानी बेहतरी और तरक़्क़ी के लिए हम यहां आज जमा हैं और तीन दिन इस सोच के साथ और इस फ़िक्र के साथ यहां जमा रहेंगे कि किस तरह हम अपनी धार्मिक, इलमी और रुहानी हालत को बेहतर करें। अगर यह सोच नहीं तो यहां आना बेफ़ाइदा है। आज के इस दौर में जबकि दुनिया ख़ुदा तआला को भुला रही है, हर मज़हब को मानने वाला अपने मज़हब से दूर हट रहा है, जो संख्या हर साल सामने आती हैं उनसे पता चलता है कि हर साल एक बड़ी संख्या इस बात का इज़हार करती है कि वे ख़ुदा तआला के वजूद के मुनकिर हैं यहां तक कि मुस्लमानों की भी जो हालत है वह हमें यही बताती है कि नाम के मुस्लमान हैं और दुनिया-दारी ग़ालिब है, ऐसे में अगर हम भी जो इस बात का दावा करते हैं कि हम ने ज़माना के इमाम को माना है, उसे माना है जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार अल्लाह तआला ने इस ज़माने में दीन के पुन:जागरण के लिए भेजा है और अब हमारा यह अह्द है कि हम ने भी इस मसीह मौऊद और महदी मौऊद के मिशन को पूरा करना है, अगर हम अपनी हालतों की बेहतरी की तरफ़ ध्यान नहीं करते तो हमारा मसीह मौऊद की बैअत में आना एक ज़ाहरी ऐलान है जो रूह से ख़ाली है, हमारा बैअत का अहद नाम का बैअत का अहद है जिसे हम पूरा नहीं कर रहे, हमारा यहां जलसा के लिए जमा होना एक दुनियावी मेले में जमा होने की तरह है। अत: हर अहमदी के लिए यह बड़ा सोचने का स्थान है, एक फ़िक्र के साथ अपनी समीक्षा करने की तरफ़ ध्यान की ज़रूरत है कि अगर यह सोच है तो फिर बेफ़ाइदा है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा के आयोजन का जो आरम्भ हमारे सामने पेश फ़रमाया है अगर हम उनको सामने रखकर अपने जायज़े लें तो ना सिर्फ इन तीन दिनों के मक़सद को पूरा करने वाले बन जाऐंगे और जलसा में शामिल होने वालों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जो दुआएं हैं उनके हासिल करने वाले बन जाऐंगे और फिर उनको स्थायी अपनी ज़िन्दगियों का हिस्सा बना कर अपनी दुनिया तथा आख़रत संवारने वाले बन जाऐंगे और ना सिर्फ अपनी हालतों बल्कि हमारे नेक कर्मों को प्राप्त करने के लिए कोशिश और इस पर अनुकरण हमारी अगली नस्लों के धर्म पर क़ायम रहने और ख़ुदा तआला के क़रीब करने वाले बना कर उन्हें भी ख़ुदा तआला के फ़ज़्लों को हासिल करने वाला बना देंगे। जहां दुनिया ख़ुदा तआला और धर्म से दूर जा रही है हमारी नस्लें ख़ुदा तआला के क़रीब होने वाली होंगी और दुनिया को ख़ुदा तआला के क़रीब लाने का कारण बन रही होंगी

अत: अगर हमने अपने बैअत के वादा को पूरा करना है, अपनी नस्लों को बचाना है तो फिर इन उद्देश्यों को सामने रखने की ज़रूरत है जो जलसा के आयोजन के हैं, इन तीन दिनों को इस वादा के साथ गुज़ारने की ज़रूरत है कि य बातें अब हमारी ज़िन्दगियों का हिस्सा हमेशा रहेंगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा के उद्देश्य बयान फ़रमाते हुए फ़रमाया कि आख़िरत की फ़िक्र हो। जलसा पर आने वालों के लिए इसलिए जलसा आयोजित किया जा रहा है कि उनको यहां रह कर इस माहौल में रह कर अपनी आख़िरत की फ़िक्र हो। ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ पैदा हो। तक़्वा उनमें पैदा हो। नर्म दिल्ली पैदा हो। आपस की मुहब्बत और भाईचारा का माहौल पैदा हो, विनय और विनम्रता पैदा हो ,सच्चाई पर वे क़ायम हों और धर्म की ख़िदमत के लिए सरगर्मी हो।

(उद्धरित शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 6 पृष्ठ 394)

अत: यह है आज हमारे यहां जमा होने का मक़सद। आप के मानने वाले हर फ़र्द मर्द, औरत, जवान, बूढ़े को आप के आदेश के अनुसार आख़िरत की इस हद तक फ़िक्र होनी चाहिए कि दुनियावी चीज़ें उस के मुक़ाबला में कोई हैसियत ना रखती हूँ। इस भौतिक दुनिया में रहते हुए यह बहुत बड़ा काम है, एक बहुत बड़ा चैलेंज है जिसको पूरा करने के लिए बड़े जिहाद की ज़रूरत है। आख़िरत की फ़िक्र तब ही हो सकती है जब ख़ुदा तआला की ज़ात पर कामिल यक़ीन हो और इस बात पर यक़ीन हो कि यह ज़िन्दगी तो कुछ साल है, ज़्यादा से ज़्यादा कोई 80 साल ज़िन्दा रह लेता है, 90 वे साल ज़िन्दा रह लेता है या हद सौ साल ज़िन्दा रह लेता है लेकिन इतना समय भी हर एक को नहीं मिलता। बहुत से हैं जो इस से बहुत पहले इस दुनिया से गुज़र जाते हैं। इस के बाद फिर आख़िरत की ज़िन्दगी है जो हमेशा की है। अत: अक़्लमंद इन्सान वही है जो अस्थायी चीज़ को स्थायी चीज़ पर क़ुर्बान कर दे लेकिन होता यह है कि हम इस अस्थायी चीज़ पर, इस अस्थायी ज़िन्दगी पर मुस्तक़िल ज़िन्दगी को क़ुर्बान कर देते हैं और फिर अपने आपको यह दुनियादार बहुत बड़ा और अक़्लमंद समझते हैं। अत: एक मोमिन इस के विपरीत करता है और करना चाहिए। तब ही वह मोमिन कहला सकता है। वह अपने दिल

में ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ रखता है। अल्लाह तआला का भय उस के दिल में होता है। अल्लाह तआला की मुहब्बत सारी दुनियावी मोहब्बतों पर ग़ालिब आ जाती है। अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और भय इसलिए नहीं होता कि मरने के बाद की ज़िन्दगी में सज़ा मिलेगी बल्कि इसलिए है कि मेरा प्यारा ख़ुदा मुझसे नाराज़ ना हो जाए और जब यह मुहब्बत के जज़बात होंगे तब ही इन्सान ख़ुदा तआला के हुक्मों पर अनुकरण करने की भी कोशिश करता है। इन्सान का इस दुनिया का हर कर्म आख़िरत को सामने रखते हुए होता है। इस को यह यक़ीन होता है कि मेरा ख़ुदा ही है जो मेरी परवरिश के सामान करता है, मेरा ख़ुदा ही है जो मुझे अपनी नेअमतों से नवाज़ता है। उनमें हर किस्म की नेअमतें शामिल हैं दुनियावी भी और रुहानी भी। अगर मैं उस की इबादत का हक़ अदा करता रहा, इस ख़ुदा को ही सब ताक़तों का मालिक समझते हुए उस के आगे झुका रहने वाला बना रहा तो इस की नेअमतों से हिस्सा पाता रहूँगा इंशा अल्लाह। मैं अगर उस के बताए हुए आदेशों और मना किए गए कामों के अनुसार ज़िन्दगी गुज़ारता रहा तो उस के फ़ज़लों का वारिस बनता रहूँगा। अगर अल्लाह तआला की मुकम्मल इताअत करते हुए और तक़्वा पर क़ायम रहते हुए उस के और इस के बंदों के हुक़ूक़ अदा करता रहा तो वह मुझसे राज़ी होगा। अत: यह सोच है और इस के अनुसार अमल है जो यक़ीनन ह लिल्लाह तआला के वाअदे के अनुसार उस के इनामों और फ़ज़लों का हासिल करने वाला बनाएगा और यही लोग हैं जो तक़्वा पर चलने वाले कहलाते हैं जो यह सोच रखते हैं यानी वो जो अल्लाह तआला के तमाम हुक्मों पर अमल करने वाले हैं, जिनके दिल नर्म होंगे और होते हैं क्योंकि हर लम्हा उनके दिल में ख़ुदा होता है। यही हैं जिनके एक दूसरे के लिए ख़ुदा तआला के लिए मुहब्बत के जज़बात होते हैं अर्थात उनकी मुहब्बत और भाईचारा व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए नहीं होता बल्कि सिर्फ और सिर्फ ख़ुदा तआला के लिए होता है। इसी तरह तक़्वा पर चलने वाले हैं जिनमें विनय पैदा होती है। विनय के इज़हार सिर्फ अपने स्तर और दौलत के लिहाज़ से बड़े से नहीं होते, इन ही के सामने विनय नहीं दिखाते जो बड़े हैं, रुतबे में बड़े हैं या दुनियादार हैं बल्कि ग़रीबों और मिस्कीनों से भी आजज़ी का इज़हार करते हैं और यही लोग हैं जो सच्चाई पर हर वक़त क़ायम हैं और समझते हैं कि सच्ची बात ही ख़ुदा तआला तक पहुँचाती है और झूठ जो है वह शिर्क की तरफ़ ले के जाता है। और जब आख़िरत की फ़िक्र है और ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ है और तक़्वा की हक़ीक़त जानते हैं तो फिर एक शख़्स मोमिन कहला कर फिर झूठ किस तरह बोल सकता है और उन बातों के हासिल करने वाले और नेकियों की रूह को समझने वाले ही हैं जो धर्म की ख़िदमत में भी हक़ीक़त में सरगर्म होते हैं वरना तो यह जो ख़िदमत है बज़ाहिर यह भी कुछ लाभों को प्राप्त करने के लिए हो जाती है। हम देखते हैं कि मुस्लमानों में सैंकड़ों उल्मा हैं जो धर्म के नाम पर बज़ाहिर बड़े सरगर्म हैं और अंदर से धर्म के नाम पर ज़ुल्म कर रहे हैं, जिनमें तक़्वा की कमी है, जिनमें ख़ुदा का ख़ौफ़ नज़र नहीं आता, जिन को आख़िरत से ज़्यादा दुनिया के मुफ़ादात प्रिय हैं और नाम ख़ुदा और आख़िरत का लेते हैं।

अत: इन बातों की रूह की ज़रूरत है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम में पैदा करना चाहते हैं कि ज़ाहिरी ख़ौल ना हो बल्कि रूह हो ,सार हो। इन बातों को सामने रखते हुए हमें अपने जायज़े लेने की ज़रूरत है कि क्या हम इस नीयत से जलसा में शामिल हो रहे हैं और अपने अंदर इन उद्देश्यों को हासिल करने की एक तड़प रखते हैं। अगर मानवीय कमज़ोरियों की वजह से भूतकाल में हमसे इन बातों के हुसूल के लिए गलतियां और कोताहियों हो गई हैं तो भविष्य में हम एक नए इरादा के साथ इन नेकियों को पैदा करने और उन्हें क़ायम रखने की यथा सम्भव कोशिश करने के लिए तैयार हैं और करेंगे? आज हम यह अहद करते हैं कि हम दुनिया से ज़्यादा आख़िरत की फ़िक्र करने वाले होंगे, हम ख़ुदा का ख़ौफ़ और इस की ख़शीयत और इस की मुहब्बत को हर चीज़ पर प्राथमिकता देंगे, हम तक़्वा की बारीक राहों पर चलने की यथा शक्ति कोशिश करेंगे, हम अपने दिलों में दूसरों के लिए नरमी पैदा करेंगे, हम आपस में मुहब्बत और भाई चारे को इस क़दर बढ़ाएंगे कि यह मुहब्बत और भाईचारा एक मिसाल बन जाए, विनय और विनम्रता में हम बढ़ने वाले बनेंगे, सच्चाई और सच्ची बात हमारी एक विशेषता बन जाएगी कि हर आदमी कहे कि अहमदी हैं जो हमेशा सच पर क़ायम रहते हैं, सच बोलते हैं और इस के लिए बड़े से बड़ा नुक़्सान भी बर्दाश्त कर लेते हैं। धार्मिक सेवाओं के लिए ऐसे सरगर्म होंगे जो एक मिसाल होगी और इस के लिए पहले से बढ़कर ख़ुदा तआला के धर्म के पैग़ाम को अपने माहौल के हर शख़्स तक पहुंचाने की कोशिश करेंगे, उनको बताएँगे कि हक़ीक़ी इस्लाम क्या है।

अगर हम अपने इस अहद को पूरा करने वाले बन गए, हमारी ज़िन्दगियां उस के अनुसार गुज़रने लग गईं तो यक़ीनन हमने बैअत के वादा पूरा कर लिया।

अत: आएं आज हम इन बातों के हुसूल के लिए अपना लाहे अमल बनाएँ। आख़िरत की फ़िक्र और अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखने वाला सबसे पहले अपनी इबादत की हिफ़ाज़त की तरफ़ ध्यान करता है, इस तरफ़ देखता है कि अल्लाह तआला ने मेरी ज़िन्दगी का मक़सद क्या रखा है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि إِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا (अज़ज़ारियात: आयत 57)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस का अनुवाद इस तरह फ़रमाया है कि अर्थात मैंने जिन और इन्सान को इसलिए पैदा किया है कि वे मुझे पहचानें और मेरी इबादत करें। फ़रमाया अत: इस आयत की दृष्टि से वास्तविक लक्ष्य इन्सान की ज़िन्दगी का ख़ुदा तआला की इबादत और ख़ुदा तआला की मार्फ़त और ख़ुदा तआला के लिए हो जाना है। फ़रमाया यह तो ज़ाहिर है कि इन्सान को तो यह मर्तबा हासिल नहीं है कि अपनी ज़िन्दगी का लक्ष्य अपने अधिकार से आप निर्धारित करे । यदि इन्सान मुक़र्रर करता है लेकिन इस को हासिल नहीं है क्योंकि इन्सान ना ही अपनी मर्ज़ी से आता है और ना ही अपनी मर्ज़ी से वापस जाएगा बल्कि वह एक मख़लूक़ है और जिसने पैदा किया और समस्त हैवानों की तुलना में उम्दा और उच्च ताकतें उस को प्रदान कीं उसने उस की ज़िन्दगी का एक मुद्दा ठहराया है, एक मक़सद ठहराया है चाहे कोई इन्सान इस मुद्दा को समझे या ना समझे मगर आप फ़रमाते हैं कि इन्सान की पैदाइश का मुद्दा निसन्देह ख़ुदा की इबादत और ख़ुदा की मार्फ़त और ख़ुदा तआला में फ़ना हो जाना ही है।

(उद्धरित इस्लामी उसूल की फ़िलास्फ़ी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 414)

अत: इस मक़सद को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला ने हमें जो इबादत और उपासना का तरीक़ा सिखाया है वह क्या है? वह नमाज़ का क़ियाम है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि إِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا (अन्निसा: 104) कि यक़ीनन नमाज़ मोमिनों पर वक़्त की पाबंदी के साथ फ़र्ज़ है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं नमाज़ मौकोता के मस्ला को बहुत अज़ीज़ रखता हूँ।

(उद्धरित मलफ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 63)

यह मस्ला ऐसा है जो मुझे बहुत अज़ीज़ है और बहुत प्यारा है। यह मसला अर्थात निर्धारित समय पर पर नमाज़ पढ़ा जाना ज़रूरी है। लेकिन इस ज़माना में हम देखते हैं कि ज़रा ज़रा सी बात पर नमाज़ों की वक़्त पर अदायगी और लापरवाही अक्सर लोग बरत जाते हैं बल्कि वक़्त निर्धारित समय तो अलग रहा कुछ नमाज़ें ही नहीं पढ़ते। पाँच की बजाय तीन चार नमाज़ें पढ़ लेंगे, सुस्ती दिखा जाते हैं हालाँकि अल्लाह तआला ने नमाज़ों की हिफ़ाज़त का मोमिनों को इरशाद फ़रमाया है। अल्लाह तआला फ़रमाता है حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى (अल्बकर: 239)कि नमाज़ों का और विशेष रूप से मध्य नमाज़ का पूरा ख़्याल रखो लेकिन कारोबारों और नौकरियों की वजह से हम में से कुछ ज़ुहर अस्र की नमाज़ नष्ट कर देते हैं, टीवी प्रोग्रामों की वजह से या अपने शाम के कुछ ज़ाती प्रोग्रामों की वजह से मग़रिब इशा की नमाज़ें नष्ट हो जाती हैं। नींद का बहाना कर के फ़ज्र की नमाज़ नष्ट कर देते हैं। अत: हम में से हर एक को अपनी समीक्षा करने की ज़रूरत है क्या हम अल्लाह तआला के हुक्म पर अनुकरण कर रहे हैं या नहीं? जमाअत के ख़ास प्रोग्रामों और रमज़ान के महीने में बाजमाअत नमाज़ें पढ़ कर हम समझ लेते हैं कि हमने अल्लाह तआला के हुक्म पर अनुकरण कर लिया। बाक़ी सारा साल चाहे इस पर बाक़ायदा अनुकरण हो या ना हो फ़र्क़ नहीं पड़ता लेकिन सुनें और इस बात को देखें कि नमाज़ की एहमीयत बयान फ़रमाते हुए अल्लाह तआला और इस का रसूल क्या फ़रमाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ (अलतूब18) कि अल्लाह तआला की मस्जिदें तो वही आबाद करते हैं जो अल्लाह पर ईमान लाए और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जब तुम किसी शख़्स को मस्जिद में इबादत के लिए आते-जाते देखो तो तुम उस के मोमिन होने की गवाही दो इसलिए कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अल्लाह की मस्जिद को वही लोग आबाद करते हैं जो ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं।

(सुनन इब्न माजा किताबुल मसाजिद हदीस 802)

वैसे कहने को तो हम सब अपने आपको ईमान लाने वाला कहते हैं लेकिन अल्लाह तआला और इस के रसूल के नज़दीक मोमिन वे हैं जो अल्लाह के घर को आबाद रखते हैं इसलिए कि अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान है।

यहां यह भी वाज़िह हो गया कि सिर्फ मस्जिद आना ही काफ़ी नहीं है बल्कि अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान के साथ आना ज़रूरी है और जो यह सोच रखने वाला होगा उसे अल्लाह तआला का ख़ौफ़ भी होगा ,वह मस्जिदों में आकर फ़ित्ना पैदा नहीं करेगा, वह इन नमाज़ियों में शामिल नहीं होगा जिनकी नमाज़ें उनके लिए हलाकत का कारण होती हैं। अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने की बजाय ऐसे नमाज़ी फिर अल्लाह तआला की नाराज़गी मोल लेने वाले हो जाते हैं। नहीं बल्कि यह लोग हक़ीक़ी तक़्वा रखते हैं। जो यह सोच रखते हूँ कि आख़रत के दिन का ख़्याल रखना है और अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में रखना है। उनके दिल नर्म होते हैं। उनमें मुहब्बत और प्यार और भाईचारा होता है। उन में विनय होती है। वे सच्चाई पर क़ायम होते हैं। वे इस्लाम की अमन वाली शिक्षा की तब्लीग़ करते हैं। उनकी मस्जिदें ख़ौफ़ की जगह नहीं होतीं और ना ही फ़ित्ने की जगह होती हैं। इसी लिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि सिर्फ इस मस्जिद में नमाज़ के लिए खड़े हो जिसकी बुनियाद तक़्वा पर है ना कि फ़ित्ना तथा फ़साद के उद्देश्य से बनाई गई मस्जिद है। अत: जो तक़्वा पर क़ायम रहते हुए मस्जिदों को आबाद करते हैं वे अल्लाह के हुक़ूक़ की अदायगी भी करते हैं और बन्दों के हुक़ूक़ की भी अदायगी करते हैं। ऐसे ही लोगों को ख़ुशख़बरी देते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला इन्सान से पहला हिसाब जो लेगा उस के बारे में फ़रिश्तों को फ़रमाएगा कि मेरे बंदे की नमाज़ को देखो, पहली बात तो यह देखो कि बंदा नमाज़ पढ़ता है कि नहीं। जिनकी नमाज़ें मुकम्मल होंगी उनके नामा आमाल में मुकम्मल नमाज़ें ही लिखी जाएँगी वे तो हिसाब साफ़ हो गया लेकिन आगे फिर फ़रमाते हैं कि जिनकी फ़र्ज़ नमाज़ों में कमी रह जाएगी उनके बारे में कहेगा कि इस की नफ़ली इबादत देखो वे क्या थी। अगर फ़र्ज़ में कोई कमी रह गई है तो इस को नफ़ल से पूरा कर दो।

(सुनन अब्बू दाऊद किताबुस्सलात हदीस 864)

अत: अल्लाह तआला ने यहां जो मेरे बंदे फ़रमाया है तो इसलिए कि यह लोग जो हैं अपनी तरफ़ से कोशिश कर के अल्लाह तआला की बन्दगी करने वाले हैं और इस की इबादत का हक़ अदा करने की कोशिश करने वाले हैं। लेकिन फिर भी मानवीय तक़ाज़ा के अधीन कमज़ोरी है, भूल चूक हो जाती है, कुछ हालतें ऐसी आ जाते हैं तो इस को माफ़ करने और अपने बंदे की नेकियों के पलड़ा को ज़्यादा करने के लिए अपनी रहमत और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाते हुए अल्लाह तआला ने नवफ़लों को फ़र्ज़ों में डाल कर फ़र्ज़ों को फिर पूरा फ़र्मा दिया। अब यहां देख लें नवफ़ल पढ़ने वाले भी वही लोग होंगे जो ख़ालिस अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखते हैं। नफ़ल तो ऐसी चीज़ नहीं है जो बाहर आ के पढ़ी जाती है। यह तो छुप कर अदा किए जाते हैं, एकान्त में पढ़े जाते हैं और यह नेकी फिर वही करता है जिसको अल्लाह का ख़ौफ़ होगा और यही लोग हैं जिन को अल्लाह तआला ने मेरे बंदे कहा है कि इन बंदों से भी गलतियां हो जाती हैं लेकिन वे गलतियां मुस्तक़िल जारी नहीं रहतीं। इन ग़लतियों को दूर करने की कोशिश करते हैं। अत: यह है अल्लाह तआला की रहमत का सुलूक। एक तरफ़ तो यह बता दिया कि नमाज़ कोई मामूली चीज़ नहीं है इस का हिसाब सबसे पहले होगा इसलिए उस की अदायगी की तरफ़ ध्यान रखो लेकिन साथ ही यह भी कह दिया कि अगर तक़्वा पर चलते हुए मेरी बन्दगी और इबादत का हक़ अदा करने की कोशिश कर रहे हो तो फिर नवफ़ल जो तुम अदा करते हो उनका सवाब फ़र्ज़ों के बराबर हो जाएगा और मैं बख़शिश की चादर मैं तुम्हें ले लूँगा।

अत: जहां यह ख़ुशख़बरी है, जहां बख़शिश की उम्मीद दिलाई गई है वहां अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़ब करने के लिए नवफ़ल की अदायगी की तरफ़ भी ध्यान दिलाया गया है। अत: मोमिन वही है जो अल्लाह तआला का ख़ौफ़ दिल में रखते हुए उस के फ़ज़्लों को जज़ब करने के लिए जहां अपने फ़र्ज़ की तरफ़ ध्यान दे वहां नवफ़ल की तरफ़ भी ध्यान दे कि इस की फ़र्ज़ की कमियां पूरी होती रहीं। अत: ये वे लोग हैं जो हक़ीक़त में अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखते हैं और तक़्वा पर चलने वाले हैं और इसी तक़्वा की वजह से बाक़ी नेकियां करने की तरफ़ भी उनकी ध्यान रहती है। उनके दिल एक दूसरे के लिए नर्म होते हैं, एक दूसरे से बदला लेने की बजाय एक दूसरे को माफ़ करने की तरफ़ ध्यान रहता है। अल्लाह तआला का प्यार हासिल करने के लिए आपस में प्यार और मुहब्बत का सुलूक होता है। उनके दिलों में विनय पैदा होता है। एक दूसरे के लिए क़ुर्बानी की रूह पैदा होती है। अत: इस लिहाज़ से हर एक को अपने जायज़ा लेने की ज़रूरत है कि क्या हम में यह बातें हैं कि हक़ीक़ी आबिद हर किस्म की नेकियों को अपनाने की कोशिश करता है

अगर किसी में अपने भाई के लिए मुहब्बत के जज़बात नहीं हैं तो इस में हक़ीक़ी तक़्वा नहीं है। जिसमें नर्म दिली नहीं है वे भी अपनी फ़िक्र करे। जिसके घर में इस के बीवी बच्चे इस से तंग हैं वे भी तक़्वा से ख़ाली है। जो बीवियां अपने पतियों और बच्चों के हुक़ूक़ अदा नहीं करतीं और नाजायज़ मांगें करती हैं उनके दिल भी तक़्वा से ख़ाली हैं। अत: आपस के सम्बन्धों में जो ख़ुदा तआला के लिए मुहब्बत और नर्मी का सुलूक करने वाले हैं वही हक़ीक़ी तक़्वा पर क़ायम हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन फ़रमाएगा कि कहाँ हैं वे लोग जो मेरे प्रताप और मेरी महानता के लिए एक दूसरे से मुहब्बत करते थे और आज जबकि मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं है, क़यामत का दिन है मैं अपनी इस रहमत की छाया में उन्हें जगह दूँगा।

(सही मुस्लिम किताबुल बिर हदीस 2566)

अत: जो अल्लाह तआला के लिए इस के हुक्मों की तामील करते हुए एक दूसरे से मुहब्बत के जज़बात रखते हैं वही अल्लाह तआला के प्यार को जज़ब करने वाले हैं या दूसरे शब्दों में जो यह नहीं करते वो अल्लाह तआला की नाराज़गी को पाने वाली भी बन सकते हैं। अत: यह रूह हम में से हर एक को अपने अन्दर पैदा करने की ज़रूरत है। हम यह नारा लगाते हैं कि "मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं" तो पहले अपने घरों और अपने परिवेश में इस का इज़हार करने की ज़रूरत है ताकि दुनिया को हक़ीक़ी रंग में यह पैग़ाम पहुंचा सकें और फिर यह ऐसा काम है जिसमें ज़रा सी कोशिश से बग़ैर किसी बड़ी चेष्टा के हम अल्लाह तआला के रहमत के साया में जगह पाने वाले बन सकते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विभिन्न अवसरों पर समाज के अमन तथा सुकून को क़ायम रखने और मुहब्बत और प्यार और भाईचारा को बढ़ाने के लिए जो नसीहतें फ़रमाई हैं उनके बारे में एक अवसर पर फ़रमाया कि मुस्लमान मुस्लमान का भाई है। वह इस पर ज़ुल्म नहीं करता और ना ही उसे अकेला और तन्हा छोड़ता है। फ़रमाया जो शख़्स अपने भाई की ज़रूरत को दूर करने में लगा रहता है इस की ज़रूरतों को पूरा करता है अल्लाह तआला उस की ज़रूरतों को पूरा कर देता है और जिसने किसी मुस्लमान की मुसीबत को दूर किया अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस के मसीबतों में से एक मुसीबत उस की कम कर देगा और जो किसी की सत्तारी करता है पर्दापोशी करता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस की सत्तारी फ़रमाएगा।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मज़ालम हदीस 2442)

अत: अल्लाह तआला तो विभिन्न तरीक़ों से हम पर अपनी रहमत और शफ़क़त की नज़र डालता है और हमारी बख़शिश के सामान करता है। यह इन्सान ही है जो अपनी नाएहलियों, अहंकारों और ज़िदों की वजह से अल्लाह तआला को नाराज़ करता रहता है

अत: बड़े ख़ौफ़ का स्थान है, बड़े सोचने की ज़रूरत है इन दिनों में जबकि हमारे जज़बात, ख़्यालात नेकी की तरफ़ झुके हुए हैं, हम इस सोच के साथ यहां आए हैं कि एक जलसा में शामिल होना है जहां नेकी की बातें सुनेंगे, अपने जायज़े लें, अपने जायज़े लेते हुए अपनी इबादतों के साथ बन्दों के हुक़ूक़ की अदायगी की तरफ़ भी ध्यान दें, नरम दिली, आपस की मुहब्बत और विनम्रता की हक़ीक़त पहचानने की कोशिश करें और यह इस लिहाज़ से भी हम पर ज़रूरी हो जाता है कि हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो बैअत का वादा किया है इस में शिर्क से परहेज़, नमाज़ों की अदायगी; फ़र्ज़ नमाज़ें भी और नवफ़ल की अदायगी के साथ हमने यह बैअत का वादा भी किया है कि हम उमूमी तौर पर अल्लाह तआला की मख़लूक़ को और खासतौर पर मुस्लमानों को अपने नफ़सानी जोशों से किसी किस्म की तकलीफ़ नहीं देंगे। सिर्फ आपस के मुस्लमानों के लिए ही नहीं, जमाअत के मैंबरों के लिए ही नहीं। ठीक है अपने घर से शुरू करो, आपस में भी होना चाहिए फिर मुस्लमानों के लिए फिर साधारण सृष्टि के लिए भी, हर एक के लिए हमारे दिल में एक प्यार और मुहब्बत के भावनाएं होने चाहिऐं। नफ़सानी जोशों से हमें ख़ाली होना चाहिए। अपने आधीनों के साथ भी नेक सुलूक करने वाले हम हों। हमारे ऐसे सुलूक हूँ जिससे हम ऐसे बन जाएं कि हर एक हमारे उन व्यवहारों को, हमारी नेकियों को परखना चाहे तो परख सके। यह देखना चाहे कि क्या यह स्तर जो कहते हैं उस के अनुसार हैं? क्या हम उस के अनुसार अमल कर रहे हैं? तो अगर यह स्तर हैं और दूसरा जब हमें परखता है इस के अनुसार परख ले कि वास्तव में यह हैं तो तब ही हम कह सकते हैं कि हम हक़ीक़ी मोमिन हैं और हम बैअत का हक़ अदा कर रहे हैं। बैअत जो हम करते हैं इस में एक शर्त यह भी है कि अहंकार को मुकम्मल तौर

पर छोड़कर विनय और मिस्कीनी की ज़िन्दगी व्यतीत करूँगा

(उद्धरित इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 3 पृष्ठ 564)

यह विनय और मिस्कीनी का पैदा करना सिर्फ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा के आयोजन के उद्देश्य में से एक मक़सद बयान नहीं किया बल्कि हमने आप से जो बैअत के वादा किया है इस में यह वादा है कि मैं विनय और मिस्कीनी से ज़िन्दगी व्यतीत करूँगा। अत: यह वादा पूरा करना हमारी ज़िम्मेदारी है और यही सच्चाई की तरफ़ पहला क़दम है कि हमने जो बैअत का वादा किया है इस को पूरा करें। अत: बैअत की शर्तों को भी पढ़ते रहना चाहिए, पढ़ते रहें और देखें कि क्या हम सच्चाई के साथ उन पर क़ायम हैं, उस के अनुसार अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारने की कोशिश कर रहे हैं। अगर नहीं तो दुनिया के सुधार का दावा जो हम करते हैं वह ग़लत है। इस से पहले हमें अपने सुधार की कोशिश करनी होगी वरना हम उन लोगों में शामिल होंगे जो कहते कुछ और हैं और करते कुछ और हैं। और अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों को नापसंद फ़रमाया है। हमारे कर्म हमारी सच्चाई की बजाय हमारे झूठ की तसदीक़ करने वाले होंगे। और जब यह कथनी तथा करनी का अन्तर होगा तो फिर धर्म की ख़िदमत का दावा और इस के लिए सरगर्मी का इज़हार जो है वह भी ग़लत हो जाएगा।

बेशक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सच्चे हैं, आप का दावा सच्चा है, बेशक अल्लाह तआला ने आप से कामयाबियों का वादा किया हुआ है, बेशक अल्लाह तआला ने आप को मख़लसीन की जमाअत देने का वादा फ़रमाया हुआ है लेकिन अगर हमारी हालतें ऐसी नहीं तो फिर हम उनमें शामिल नहीं होंगे जो आपके सिलसिले के मददगार हों। अत: बैअत की बरकत को प्राप्त करने के लिए अपनी हालतों के जायज़ा लेने की ज़रूरत है, जो जलसा के उद्देश्य आपने बयान फ़रमाए हैं उन पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। ख़ुश-क़िसमती से जलसा के यह तीन दिन हमें इस ग़ौर करने के लिए उपलब्ध आए हैं। इन दिनों में हर एक अपना जायज़ा लें। बजाय इस के कि इधर उधर की बातों में अपना वक़्त गुज़ारें दुआ , इस्तिग़फ़ार और दुरूद की तरफ़ हमें ध्यान रहना चाहिए और तब ही हम इस जलसा से हक़ीक़ी फ़ायदा उठा सकते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं कि

मेरी सारी जमाअत इस वसीयत को ध्यान से सुने कि वह जो इस सिलसिला में दाख़िल हो कर मेरे साथ इरादत और मुरीदी का सम्बन्ध रखते हैं इस से उद्देश्य यह है कि ताकि वह नेकचलनी और नेक कामों में और तक़्वा के उच्च दर्जा तक पहुंच जाएं और कोई फ़साद और शरारत और बदचलनी उनके नज़दीक ना आ सके। यह है तक़्वा का स्तर। किसी किस्म की भी कोई बुराई उनमें ना हो । फ़रमाया वो पांचों समय नमाज़ बाजमाअत के पाबंद हों। वे झूठ ना बोलें। वे किसी को ज़बान से कष्ट ना दें, कोई तकलीफ़ ना दें। वे किसी किस्म की बदकारी के करने वाले ना हों और किसी शरारत और ज़ुल्म और फ़साद और फ़ित्ना का ख़्याल भी दिल में ना लाएं। अत: हर किस्म के गुनाह और जुर्मों, हर किस्म के गुनाह जो हैं और जुर्म जो हैं और न कर के गए और ना कह कर और समस्त नफ़सानी जज़बात और व्यर्थ हरकतों से बचतें रहें। हर किस्म की बुराईयों से, नफ़्स की भवानाओं से बचें रहें और ख़ुदा तआला के पाक दिल और बेशर और ग़रीब मिज़ाज बंदे बन जाएं। ऐसे हो जाएं जिनके दिल पाक हैं, जिनसे कभी शरारत नहीं होती और हमेशा ग़रीब मिज़ाज रहते हैं। विनय उनमें रहती है और कोई ज़हरीला ख़मीर उन के वजूद में ना रहे। और तमाम इन्सानों की हमदर्दी उनका उसूल हो और ख़ुदा तआला से डरें और अपनी ज़बानों और अपने हाथों और अपने दल के ख़्यालात को हर एक नापाक और फ़साद फैलाने वाले तरीक़ों और ख़यानतों से बचएं और पांचों समय नमाज़ को निहायत निरन्तरता से क़ायम रखें और ज़ुल्म और अत्याचार और ग़बन और रिश्वत और अधिकारों को मारने के स्थाल पर और व्यर्थ तरफ़दारी से बचते रहें। लोगों के हुक़ूक़ मारने के स्थान पर, ग़लत तरफ़दारियाँ करनी, ग़लत किसी को नुक़्सान पहुंचाना इस से बचते रहें। और किसी बुरी सोहबत में ना बैठें। बुरी सोहबतें जो हैं उनसे बचें। नौजवानों को भी याद रखना चाहिए और बच्चों के माता पिता को भी याद रखना चाहिए कि देखें कि हमारे बच्चे इस परिवेश में किसी बुरी सोहबत में ना बैठें ,फिर वैसे ही बन जाऐंगे। और अगर बाद में साबित हो ,कई बार नहीं पता लगता कि सोहबत कैसी है फ़रमाया कि अगर बाद में साबित हो कि एक शख़्स जो उन के साथ आना जाना रखता है, बैठता उठता है, इस के साथ मेल-मुलाक़ात है वह ख़ुदा तआला के आदेशों का पाबंद नहीं है या बन्दों के हुक़ूक़ की कुछ परवाह नहीं करता या ज़ालिम तबीयत और गन्दे मिज़ाज और बुरी आदत का आदमी है तो तुम पर लाज़िम होगा कि इस बुराई को अपने बीच से दूर करो, इस से सम्बन्ध ख़त्म करो, जो अच्छी सोसाइटी है, अच्छी कम्पनी है वह एक अहमदी की होनी चाहिए।

फ़रमाया और ऐसे इन्सान से परहेज़ करो जो ख़तरनाक है और चाहिए कि किसी मज़हब और किसी क़ौम और किसी गिरोह के आदमी को नुक़्सान पहुंचाने का इरादा मत करो। किसी को नुक़्सान नहीं पहुंचाना, किसी मज़हब का आदमी हो, किसी क़ौम का आदमी हो, किसी गिरोह का हो तुम्हारे से किसी को नुक़्सान नहीं पहुंचना चाहिए। और हर एक के लिए सच्ची नसीहत करने वाला बनो। नसीहत करनी है तो सच्ची नसीहत करने वाला बन के, सच्ची नसीहत करने वाले की तरह नसीहत करो अर्थात तुम्हारा कथन और कर्म ऐसे हों कि इस नसीहत का भी असर हो और किसी किस्म की तरफ़दारी ना हो। फ़रमाया और चाहिए कि बुरों और बदमाशों और फसाद फैलाने वालों और बुरा आदतों वालों को हरगिज़ तुम्हारी मज्लिसों में स्थान ना हो और ना तुम्हारे मकानों में रह सकें कि वे किसी वक़्त तुम्हारे ठोकर का कारण होंगे। फ़रमाया मेरी जमाअत में से हर एक आदमी पर अनिवार्य होगा कि इन तमाम वसीयतों पर अनुकरण करने वाले हों और चाहिए कि तुम्हारी मज्लिसों में कोई नापाकी और ठट्ठे और हंसी की बात ना हो और नेक दिल और पाक तबीयतों और पाक ख़्याल हो कर ज़मीन पर चलो। किसी पर नाजायज़ तरीक़ा से हमला ना करो और जज़बात नफ़्स को दबाए रखो। कोई मज़हबी गुफ़्तगु हो तो नर्म शब्दों में और सभ्य तरीक़ा से गुफ़्तगु करो। अगर कोई जहालत से पेश आए तो सलाम कह कर ऐसी मज्लिस से उठ जाओ। ख़ुदा तआला चाहता है कि तुम्हें एक ऐसी जमाअत बना दे कि सारी दुनिया के लिए नेकी और सच्चाई का नमूना ठहरो। तुम होशियार हो जाओ और वाक़ई नेक दिल और ग़रीब मिज़ाज और सच्चे बन जाओ। तुम पांचों नमाज़ और अख़लाक़ी हालत से शनाख़्त किए जाओगे। तुम्हारी जो शनाख़्त है वह क्या है यही कि तुम पांचों समय बाक़ायदा नमाज़ें पढ़ने वाले हो और तुम्हारे अख़लाक़ बहुत उच्च हैं ये चीज़ें पैदा हो जाएं तुम्हारे में तो समझो तुमने बैअत का हक़ अदा कर दिया है। फ़रमाया और जिसमें बुराई का बीज है वे इस नसीहत पर क़ायम नहीं रह सकेगा। यह नसीहत में कर रहा हूँ लेकिन जिसमें बुराई का बीज है वह फिर नसीहत पर क़ायम नहीं रहेगा।

(उद्धरित मजमूआ इश्तिहारात भाग 3 पृष्ठ 46 से 48 इश्तिहार नंबर188)

अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ दे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले हों, आपकी नसीहतों और उम्मीदों पर हम पूरा उतरने वाले हों और हम इस जलसा से ज़्यादा से ज़्यादा लाभ उठाते हुए अपनी धार्मिक रुहानी और इलमी हालत को संवारने वाले भी हों और यह नेकियां फिर हम में हमेशा क़ायम भी रहें।

(अल्फज़ल अक्तूबर 25 अगस्त 2019 ई पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 2 का शेष

तो लजना की संख्या है, बाक़ी घरवालों और बच्चों के बारे में क्या रिपोर्ट है कि वे भी नमाज़ अदा करते हैं? इस पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि नमाज़ बाजमाअत के बारे में से संख्या कम है। हमारा ख़्याल है सिर्फ 44 प्रतिशत लजना अपने घरों में नमाज़ बाजमाअत अदा कर रही हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि लजना अपने बच्चों को नमाज़ की अदायगी की तरफ़ कैसे ध्यान दिलाती हैं? यह भी माँ का फ़र्ज़ होता है कि वे अपने बच्चों को नमाज़ की अदायगी करवाए । कम से कम तेरह , चौदह साल तक उम्र के बच्चों को नमाज़ के लिए कहें । इसके बाद वे कुछ हद तक independent हो जाते हैं। तो इस बारे में से भी तरबियत विभाग कोई काम कर रहा है? इस पर सेक्रेटरी तरबियत ने निवेदन किया कि हम माताओं को भी ध्यान दिलाते हैं कि वे अपने बच्चों को नमाज़ की अदायगी के लिए कहा करें।

*नेशनल सेक्रेटरी तब्लीग़ ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि इस वक़्त तक हमारे पास 24 नई बैअत करने वाले अहमदी आते हैं और इंशाअल्लाह उस संख्या में और अधिक इज़ाफ़ा हो जाएगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर नेशनल सेक्रेटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि इन नई बैअत करने वाले अहमदियों का सम्बन्ध विभिन्न क़ौमों और धर्मों से है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि इन नई बैअत करने वाले अहमदियों का break down कर के कि इन में से कितनी Americans हैं और कितने का सम्बन्ध अन्य जातियों से है, यह मालूमात सेक्रेटरी नई बैअत करने वाले अहमदियों को मुहय्या क्या करें। ताकि सेक्रेटरी नई बैअत करने वाले अहमदियों को उनके हालात के अनुसार उन के लिए तरबियत का प्रोग्राम बना सकें। इन नई बैअत करने वाले अहमदियों में से अगर उनमें से कुछ मुसलमानों से अहमदी मुसलमान हुई हैं, या ईसाईयत से इस्लाम क़बूल किया है या पहले नास्तिक थीं या किसी अन्य मज़हब से आई हैं, तो उनकी ज़रूरीयात और हालात के अनुसार उनकी तरबियत का प्रबंध किया जा सके।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तरबियत बराए नौमुबाए ने निवेदन किया कि नई बैअत करने वाले अहमदियों में अरब औरतें भी हैं और कुछ पाकिस्तानी हैं और कुछ का सम्बन्ध अन्य जातियों से है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि आपकी टीम में कोई अरबी जानने वाली औरत भी शामिल हैं? इस पर सेक्रेटरी तरबियत नई बैअत करने वाले अहमदियों ने निवेदन किया कि फ़िलहाल उनकी टीम में कोई अरब औरत नहीं है। भाषा के बारे में अरब औरत से सम्पर्क करने में किसी किस्म की कोई मुश्किलें का सामना नहीं है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मेरा ख़्याल है अब तो पुराने अरब अहमदी भी काफ़ी हैं जो आपकी इस सिलसिला में मदद कर सकते हैं। अगर ज़बान का मसला ना भी हो तो कल्चर का फ़र्क़ भी होता है। इसलिए कोई अरबी औरत ज़्यादा बेहतर तरीक़ा पर अरब नई बैअत करने वाले अहमदियों की देख-भाल कर सकती हैं। सिर्फ ज़बान ही एक रोक नहीं है। और भी कई चीज़ें देखनी पड़ती हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तब्लीग़ से पूछा कि आपका इस साल कितनी बैअतों का टार्गेट है? यह जो 24 नई बैअत करने वाले अहमदियों आपने बताई हैं वे लजना के द्वारा अहमदी हुई हैं ? सेक्रेटरी तब्लीग़ ने निवेदन किया कि हमारा 50 से 60 बैअतों का टार्गेट है। और 24 की संख्या लजना के द्वारा अहमदी होने वाली औरतों की है। लेकिन मैंने इस बारे में सेक्रेटरी तरबियत नौ मुबाए से बात की थी कि अन्य तन्ज़ीमों या जमाअतों की तरफ़ से होने वाली बैअतों के बारे में भी मालूमात होनी चाहिऐं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अब तो साल ख़त्म होने वाला है और आप इस वक़्त प्लैनिंग कर रही हैं। अब तो अगले टर्म के इलैक्शन होने वाले हैं और इस के बाद नई आमला बनेगी। इसलिए आप यह चीज़ें नोट कर लें और अगर आपकी जगह कोई और सेक्रेटरी तब्लीग़ आती हैं तो उनको इस बारे में recommend करें।

*इसके बाद सेक्रेटरी ख़िदमत ख़लक़ ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि लजना इमाउल्लाह अमरीका की तरफ़ से अफ़्रीक़ा में एक मॉडल विलेज की बुनियाद का मन्सूबा है और इस के लिए 75 हज़ार अमरीकन डालर दिया है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बहुत अच्छी बात है। मैंने अन्सारुल्लाह को भी लजना की उदाहरण देकर कहा था कि अगर लजना मॉडल विलेज के लिए ख़र्च बर्दाश्त कर सकती हैं तो अन्सारुल्लाह को भी चाहिए कि किसी बड़े प्राजैक्ट का ख़र्च बर्दाश्त करें। मैं आप लोगों को इसलिए बता रहा हूँ कि आप अपने पतियों को इस तरफ़ ध्यान दिलाया करें।

सेक्रेटरी ख़िदमत ख़लक़ ने और अधिक रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हम ने इस साल 40 हज़ार डॉलरज़ ईद के अवसर पर बच्चों को तोहफे देने के लिए पेश किए हैं और आठ लजना को ख़दीजा स्कॉलरशिप दी गई ताकि वे अपनी पढ़ाई पूर्ण कर सकें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी ख़िदमत ख़लक़ ने बताया कि चैरिटी वाकस और मीना बाज़ारों के द्वारा भी 13 हज़ार डॉलरज़ से अधिक की रक़म ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट को दी गई। इस के अतिरिक्त बहुत सी लजना सीधा भी ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट में donate करती हैं।

*इस के बाद सेक्रेटरी नासरात ने रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस वक़्त अमरीका भर में नासरात की संख्या 1015 है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मेरे ख़्याल में यह संख्या दरुस्त नहीं है। नासरात की संख्या 1015 से ज़्यादा होनी चाहिए। सेक्रेटरी नासरात ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर ने दरुस्त फ़रमाया है क्योंकि काफ़ी नई फ़ैमलीज़ इत्यादि आई हैं और उनकी संख्या का अभी ज्ञान नहीं है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि सेकरेटिरयात तजनीद को चाहिए कि वे घर-घर जाकर तजनीद के बारे में मालूमात लें। तजनीद का काम grass root level पर होना चाहिए। औरत तो दूसरी औरत के घरों के अंदर भी जा सकती हैं जबकि मर्द घरों के अंदर नहीं जा सकते। इसलिए लजना के पास तजनीद के बारे में ज़्यादा मालूमात होनी चाहिऐं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुझे हीवसटन में बताया गया था कि जब लोगों को मेरे अमरीका में आने का पता चला तो बेशुमार लोगों ने मुलाक़ात के बारे में से दरख़ास्तें देनी शुरू कर दें और उनका जमाअत को ज्ञान ही नहीं था। इस तरह फ़ैमिलियों की एक बड़ी संख्या थी जिन का जमाअत के साथ सम्पर्क हुआ। इसलिए लजना बेहतर तौर पर तजनीद डिपार्टमैंट की मदद कर सकती है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मेरा ख़्याल है कि आपने Halloween इत्यादि के बारे में नासरात को बताने के लिए कोई प्रोग्राम इत्यादि नहीं किए। वाक़फ़ात नौ की क्लासों में बहुत सी बच्चियों को इस बारे में से इलम नहीं था और मुझ से पूछ रही थीं। असल मसला यह है कि grass root level पर जा कर काम नहीं होता।

*इस के बाद मआविना सदर ने बताया कि उनके सपुर्द मीडिया वाच का काम है। हम लजना को ध्यान दिलाती हैं कि वे अख़बारों रसालों में पत्र और op-eds लिखें । हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि अभी तक कितनी लजना ने पत्र या op-eds लिख कर भिजवाए हैं? इस पर मुअवना सदर ने निवेदन किया कि पिछले साल 58 लजना ने 109 पत्र और मज़ामीन लिखे

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

थे। इस को बेहतर बनाने के बारे में से हम काम कर रहे हैं और अब हमने माहाना campaigns शुरू की हैं। जैसे नवंबर में thanksgiving का पीरियड है। इस बारे में से इस्लाम में thanksgiving के तसव्वुर के बारे में निबन्ध लिखने की तहरीक की है। इसी तरह विभिन्न वर्तमान हालतों की समस्याओं की रोशनी में भी तहरीक की जाती है।

*सेक्रेटरी इशाअत ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि हमारा त्रैमासिक रिसाला की digital कापी सारी लजना को जाती है। और इस को रिकार्ड के लिए थोड़ी सी संख्या में प्रिंट भी किया जाता है।

*इसके बाद सेक्रेटरी सेहत जिस्मानी ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि इस वक़्त 25 प्रतिशत लजना व्यायाम करती हैं। हमने अब जमाअत का प्रोग्रामों और मीटिंगज़ में व्यायाम पर-ज़ोर देना शुरू किया है।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तजनीद ने निवेदन किया कि वे तजनीद के बारे में मुतमइन नहीं हैं लेकिन अब लोकल सेकरेट्रयात तजनीद के द्वारा कोशिश कर रही हैं। कुछ मज्लिसों की लोकल सेकरेट्रयात active नहीं हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सदर लजना से मुख़ातब होते हुए फ़रमाया कि सेकरट्रयात तजनीद हों या किसी भी और विभाग की कोई सेक्रेटरी हूँ अगर वे फ़आल नहीं हैं और अपनी ज़िम्मेदारी अदा नहीं कर रहीं तो आपके पास अधिकार है कि ऐसी सेकरेट्रयात को तबदील कर दें और उनकी जगह ऐसी लजना को लेकर आएं जो काम करने वाली हों। कम से कम आपके पास मालूमात तो पूरी हूँ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी तजनीद ने बताया कि इस वक़्त लजना की कुल तजनीद 6291 है। लेकिन हमारे पास उम्र के अनुसार तजनीद का break down नहीं है।

*मुआवना सदर बराए वाक़फ़ाते नौ ने रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि इस वक़्त हमारे पास 611 वाक़फ़ात नौ हैं। उनमें से 311 पंद्रह साल से अधिक उम्र की हैं। 241अठारह साल या इस से ऊपर की हैं। इन सब ने अपने वक़्फ़ के मुआहिदा का नवीनीकरण कर लिया है। हुज़ूर अनवर के पूछने पर मुआवना साहिबा ने निवेदन किया कि हम रिपोर्ट सदर लजना और नेशनल सेक्रेटरी वक़्फ़-नौ को भिजवाते हैं। वह फिर आगे मर्कज़ में भिजवाती हैं।

*इस के बाद सेक्रेटरी सनअत-ओ-तिजारत ने अपनी रिपोर्ट पेश की। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज ने फ़रमाया कि हाल में काफ़ी immigrants आए हैं और भाषा ना आने और इस तरह के अन्य समस्यायों की वजह से जॉब इत्यादि ना होने के बारे में से उन्हें मुश्किलें हैं। आपको इस बारे में data इकट्ठा करना चाहिए और फिर उस डेटा के अनुसार कोई प्रोग्राम तय्यार कर के उन्हें दें। उन्हें सिलाई, कढ़ाई इत्यादि सिखाने या सिलाई, कढ़ाई करने के बारे में मदद दी जा सकती है। उनकी products को मार्कीट करके उन्हें उस का कुछ हिस्सा दिया जा सकता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस बारे में से आपके पास डेटा भी होना चाहिए कि कितनी लजना मेमबरात की जॉब के बारे में मदद की गई।

*सेक्रेटरी उमूरे तुलबा ने अपने विभाग की रिपोर्ट पेश की। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह नया विभाग है। इसी तरह फ़रमाया कि क्या आप के पास डेटा मौजूद है कि कितनी छात्राएं हाई स्कूल में हैं, कितनी कालेजों में हैं, कितनी यूनीवर्सिटी में हैं और कितनी अन्य प्रोफ़ैशनल फ़ील्डज़ में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं ? इस पर सेक्रेटरी उमूर तुलबा ने निवेदन किया कि हमने हाल ही में सर्वे किया है जिसका 369 लोगों ने जवाब दिया है और अभी और अधिक डेटा जमा कर रहे हैं। इस वक़्त सात chapters हैं जहां AMSA काम कर रही है। अभी और अधिक जमाअतों में भी इस को स्थापित करने के बारे में से काम हो रहा है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी उमूर तुलबा ने बताया कि AMSA अपनी अपनी यूनीवर्सिटीयों में तब्लीग़ कर रही हैं और ख़िदमत ख़लक़ के काम भी करती हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि AMSA की सदरों को यह भी कहें कि वे छात्राओं को ध्यान दिलाती रहें कि वे इस्लामी शिक्षाओं की पूर्ण पैरवी करें ।

*उस के बाद सेक्रेटरी माल ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया हमारा कुल बजट 3 लाख 82 हज़ार डॉलरज़ का था और अल्हम्दुलिल्लाह हम ने 4 लाख 27 हज़ार से अधिक की वसूली की जो कि proposed budget से तेरह प्रतिशत ज़्यादा थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सेक्रेटरी माल ने बताया कि हमारी कमाने वाली लजना मेमबरों की संख्या एक हज़ार से अधिक है। और उनका कल चन्दा 2 लाख 42 हज़ार से अधिक था। सदर लजना ने निवेदन किया कि मेरे ख़्याल में यह संख्या कम है। कुल संख्या इस से ज़्यादा होगी। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अगर स्थानीय मज्लिसों की सेकरेट्रियात माल काम करने वाली हों तो आप इस बारे में से बेहतरी ला सकती हैं।

*सेक्रेटरी माल ने बताया कि इज्तिमा के चन्दा की कुल वसूली 74 हज़ार डॉलरज़ से अधिक है। जबकि इज्तिमाओं पर कुल ख़र्च 59 हज़ार डॉलरज़ से अधिक आता है। रीजनल इज्तिमाओं पर हम सिर्फ जयाफ़त का ख़र्च देते हैं। बाक़ी खर्च रीजन ख़ुद उठाता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर सदर लजना ने बताया कि देश में कुल चार इज्तिमाआत होते हैं। इस साल इन चारों इज्तिमाओं की हाज़िरी 2337 थी।

सदर लजना ने निवेदन किया कि क्या उन्हें इज्तिमा पर और अधिक खर्चों करने चाहिऐं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपको हाज़िरी में इज़ाफ़ा करना चाहिए और उसके साथ इज्तिमा पर ज़्यादा ख़र्च करना चाहिए। लेकिन फुज़ूलखर्ची नहीं होनी चाहिए बल्कि एहतियात के साथ ख़र्च करें और हाज़िरी में इज़ाफ़ा करें।

* सेक्रेटरी तहरीक जदीद ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि पिछले साल हम ने 5 लाख 69 हज़ार डॉलरज़ से अधिक वसूल किए थे। जिस में पिछले से पिछले साल में 20 हज़ार का इज़ाफ़ा था। हमारा कोई बजट या टार्गेट मुक़र्रर नहीं था लेकिन हमने कोशिश की थी कि 100 प्रतिशत लजना तहरीक जदीद में शामिल हों। इस में सात हज़ार से अधिक शामलीन थे। उनमें लजना, नासरात और सात साल से छोटी उम्र के बच्चे भी शामिल हैं। सेक्रेटरी तहरीक जदीद ने बताया कि हम ने एक जगह भी ख़रीदी है जिसमें एक घर भी बुनियाद भी रखी है। वहां लजना हाल तैय्या करने का मन्सूबा है। जिस में 500 लजना आ सकती हैं। इसके साथ दफ़्तरों और कुछ कमरे इत्यादि बनाने का भी प्रोग्राम है। इस वक़्त हमने तामीर के कामों की प्लैनिंग और इजाज़त इत्यादि का काम शुरू किया है।

*सेक्रेटरी वक़्फ़ जदीद ने बताया कि उनके सपुर्द वक़्फ़ जदीद के अतिरिक्त मुआवना सदर बराए पब्लिक अफेयर्ज़ के मामले भी हैं। सेक्रेटरी वक़्फ़ जदीद ने बताया कि वक़्फ़ जदीद में शामिल होने वालों की कुल संख्या 7300 से अधिक थी जिसमें नासरात, सात साल से छोटी उम्र की बच्चियां भी शामिल हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 2012 ई में हमें हिदायत फ़रमाई थी कि लजना के टार्गेट में से 20 प्रतिशत नासरात का टार्गेट होना चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि चन्दा की रक़म की बजाय मुझे इस में शामिल होने वालों की संख्या का ज़्यादा फ़िक्र होती है। इसलिए कोशिश

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

करें कि सारी नासरात इस में शामिल हुआ करें। सेक्रेटरी वक़्फ़ जदीद ने बताया कि साल 2017 ई में वक़्फ़ जदीद के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया था कि चन्दा में कमी नहीं लेकिन रिपोर्टिंग सिस्टम ठीक नहीं है। इसलिए पूर्ण रिपोर्ट नहीं आती। इसलिए हमने इस साल अपना रिपोर्टिंग सिस्टम तबदील किया है जिसकी वजह से अल्हम्दुलिल्लाह शामलीन की संख्या में इसलिए वृद्धि हुई है।

*मुआवना सदर बराए पब्लिक अफेयर्ज़ ने रिपोर्ट देते हुए बताया कि 2017 ई में हमने स्थानीय मज्लिसों में 117 प्रोग्राम आयोजित किए थे। इस के अतिरिक्त इस वक़्त 21औरत सैनेटर्ज़ हैं और हमने सारी औरत सैनेटर्ज़ से मुलाक़ातें की हैं। यह नया विभाग है , इसलिए इस में हम अभी और अधिक काम कर रहे हैं। हर साल 9/11 कम्पेन भी करते हैं जिस में जो भी औरत मेयरज़, औरत सैंटर्ज़ या अन्य औरत जो उच्च ओहदों पर फ़ाइज़ हैं उनके साथ मीटिंगज़ की जाती हैं। इन मीटिंगज़ में हम जमाअत अहमदिया और लजना इमाउल्लाह की तंज़ीम का परिचय करवाते हैं। इस का बड़ा अच्छा फीडबैक मिलता है।

*मुआवना सदर ने निवेदन किया कि हम नेशनल Day on Hill का आयोजन करती हैं। क्या इस में सारी मज्लिसों की नुमाइंदगी ज़रूरी है? हमारी 74 मज्लिसें हैं और इस अवसर पर लगभग 45 की संख्या होती है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सारी मज्लिसों की नुमाइंदगी ज़रूरी नहीं है। लेकिन कुछ ना कुछ नुमाइंदगी होनी चाहिए। हर साल इस में नई मज्लिसों और नए मैंबर्ज़ शामिल कर लिया करें। इस से उन्हें भी पता चलता रहेगा कि आप लोग यहां क्या करती हैं और इस से उन्हें स्थानीय तौर पर सम्पर्क करने में भी फ़ायदा होगा।

*इसके बाद रीजनल सदर लजना इमाउल्लाह ने बारी बारी अपने अपने रीजनज़ का परिचय करवाया और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इन रीजनज़ की मज्लिसों और लजना मैंबर्ज़ की संख्या के बारे में पूछा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि रीजनल सदरों का अपने अपने रीजन की सारी लजना मैंबर्ज़ के साथ सम्पर्क होना चाहिए और तजनीद के रिकार्ड के बारे में से भी काम होना चाहिए।

*इस के बाद सदर साहिबा लजना ने निवेदन किया कि लजना सैक्शन प्राईवेट सेक्रेटरी ने हमें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की जर्मनी की नेशनल आमिला लजना इमाउल्लाह की मीटिंग के minutes भिजवाए थे। इन में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई थी कि हैज़ वाली औरत को मस्जिद जाने की इजाज़त नहीं है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यह मेरी हिदायत नहीं है बल्कि यह हदीस है।

सदर लजना ने निवेदन किया कि कई बार शूरा या अन्य प्रोग्रामों के वक़्त कुछ लजना अपने हैज़ की वजह से प्रोग्रामों में शामिल नहीं हो पातीं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपको चाहिए कि ऐसे प्रोग्रामों का आयोजन मस्जिद के अन्दर ना क्या करें। लेकिन अगर मस्जिद के अंदर करती हैं तो फिर ऐसी औरत जिनके हैज़ के दिन चल रहे हों उन्हें इन प्रोग्रामों में शामिल होने से छूट देनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यहां तक कि ईद के बारे में से भी खासतौर पर हदीस में आया है कि हैज़ वाली औरतें मस्जिद ना जाएं। हालाँकि ईद की नमाज़ या ईद का ख़ुत्बा फ़र्ज़ है लेकिन इस के बावजूद स्पष्ट तौर पर फ़रमाया कि हैज़ वाली औरतें मस्जिद में दाख़िल ना हूँ और मस्जिद से बाहर बैठ कर ख़ुत्बा सुनें। इसलिए मस्जिद के हाल के अतिरिक्त अगर कोई कमरा इत्यादि हो तो वहां औरतों को बिठा दिया करें। इसी तरह अपनी मीटिंगज़ इत्यादि भी उन्हीं जगहों पर आयोजित किया करें।

मीटिंग के आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अब चुनाव के बाद हो सकता है कि नई सदर लजना का च्यन हो और फिर नई आमिला चुनी जाए। इसलिए आप लोगों को चाहिए कि सारी हिदायतें और अपने तजुर्बात के बारे में से अपने बाद आने वाली सेक्रेटरीज़ को बताएं। आम तौर पर यही होता है कि जिस विभाग ने जो भी प्लैनिंग की होती है वे आप के दराज़ों में पड़ी रहती है , इसलिए नई आने वाली सेक्रेटरीज़ को इन सारी चीज़ों से सुचित किया करें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर नई आने वाली सदर लजना आप में से किसी को विभाग की सेक्रेटरी नहीं बनातीं तो आपके दिल में किसी किस्म का बुग़ज़ नहीं होना चाहिए।

नेशनल मजलिस आमला यू एस ए की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मीटिंग लगभग पौने आठ बजे तक जारी रही।

आमीन के प्रोग्राम की तकरीब

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ले आए और प्रोग्राम के अनुसार आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब का आरम्भ हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने निम्नलिखित 26 बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और आख़िर पर दुआ करवाई।

प्रिय मईज़ अहमद ख़ान, फ़ारान अहमद, हसन रशीद, सरमद अहमद वर्क, शाहनवाज़ अहमद, सरमद अहमद, इब्राहीम हमीद क़ुरैशी, रकीम अहमद साही, वासेअ मलिक, हसन मुहम्मद वानी, फ़ोज़ान अहमद, Sarim Wildan Ahmed।

प्रिया नूरुल-ऐन नईम, रोबीन अहमद ख़ान, अबीहा हरीम, आबा उसमान, अत्तयतुन्नूर मलिक, सुबीका कामरान Deo, अयान अहमद काशान, सुनाम सलीम, नाजिया अहमद, रयाम सुलतान अहमद, सबाहा अहमद, हिबतुस्सालम शाहिद, माया ताहिर, Nashmia अता ।

आमीन के प्रोग्राम की तक़रीब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

1 नवंबर 2018 ई (दिनांक जुमेरात)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक,पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाईं और विभिन्न तरह के दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दो बजे मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार छः बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस प्रोग्राम में 83 फ़ैमिलीज़ के 354 लोगों ने और 18 लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाकात का सौभाग्य पाया।

प्रत्येक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। प्रत्येक ने अपने आक़ा से दुआएं पाईं। दिल का सन्तोष पाया और प्रत्येक दुआओं के खज़ाने लिए हुए ख़ुशी तथा प्रसन्नता और इशक़ तथा मुहब्बत के आंसूओं के साथ बाहर आया। छोटा हो या बड़ा, औरत हो या मर्द, मुलाक़ात करके जब बाहर आता तो आँखें आंसूओं से भरी होतीं। प्रत्येक जानता था कि यही लम्हे जो अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब में गुज़रे, हमारी कामयाब और शान्ति वाली ज़िन्दगी की ज़मानत हैं।

मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ अमरीका की जमाअतों एल्बानी, बाल्टीमोर, सेंट्रल जर्सी, शिकागो ईस्ट,स्लेव लैंड, शार्लेट, शिकागो नॉर्थवेस्ट, शिकागो साऊथ वैस्ट, जॉर्जिया, कैरोलीना,लॉरेल, नॉर्थ जर्सी, सिलीकॉन वैली, सिलवर स्प्रिंग, साऊथ वर्जीनिया, फ़िलाडेल्फ़िया से आई थीं। कुछ फ़ैमिलीज़ बहुत लंबा और दूर का सफ़र तय करके अपने प्यारे आक़ा की मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। कइयों ने दो हज़ार पाँच सौ अठारह मील का लम्बा सफ़र जहाज़ द्वारा पौने चार घंटे में तय किया और कुछ जमाअतों से लोगों और फ़ैमिलीज़ दस घंटे का सफ़र द्वारा सड़क तय करके आई थीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं।

हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात करने वाले लोगों के ईमान वर्धक विचार

*एक दोस्त सय्यद साद साहिब ने अपनी पत्नी के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य

पाया। महोदय बयान करते हैं कि प्यारे आक़ा की मुलाक़ात से हमें नाक़ाबिल बयान इतमीनान क़लब प्राप्त हुआ है। हम हुज़ूर अनवर की रुहानी बरकतें महसूस कर सकते हैं। हुज़ूर अनवर ने मुझ से मेरे काम के बारे में से पूछा। उनकी पत्नी कहती हैं कि हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा और अब मुझे ऐसे महसूस हो रहा है कि जैसे हुज़ूर अनवर का वजूद मेरे साथ है।

*एक दोस्त देश ताहिर नज़ीर अहमद साहिब बयान करते हैं कि मैं अपनी फ़ैमिली को बहुत ही ख़ुश-क़िस्मत और ख़ुशनसीब समझता हूँ कि हमें यह अवसर मिला कि हमें अपने प्यारे आक़ा की मुलाक़ात नसीब हुई। इस मुलाक़ात ने मुझ पर बहुत ही गहरे प्रभाव छोड़े हैं।

*मलिक जलीलुल रहमान साहिब जिनका सम्बन्ध सेंट्रल वर्जीनिया की जमाअत से है, बयान करते हैं कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला हम से इस तरह मुहब्बत और दया से मिलते हैं जैसे हुज़ूर हमारे बचपन के दोस्त हैं। हुज़ूर अनवर की मुस्कुराहट हमारे दिलों को एकदम रोशन कर देती है।

*तौक़ीर नोमान साहिब ने अपनी पत्नी के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। वह बताते हैं। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात बहुत ही ख़ुश करने वाले और दोस्ताना माहौल में हुई। हुज़ूर अनवर ने हम दोनों से हमारी पढ़ाई के बारे में पूछा तो मैंने बताया कि मैं मास्टर्ज़ कर रहा हूँ। हुज़ूर अनवर ने मज़ाक करते हुए फ़रमाया कि आप में से कौन ज़्यादा कमाता है।

*फ़ख़्रंदा अहमद साहिबा बयान करती हैं कि मैंने 1992 ई में बैअत की थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मेरी पहली मुलाक़ात थी। हुज़ूर अनवर बहुत शफ़ीक़ और वास्तविक हमदर्द और रुहानी पिता हैं और मुझसे मेरी सेहत के बारे में पूछा। मैं कैंसर के मर्ज़ से ठीक हुई हूँ। हुज़ूर अनवर ने मुझे इस मर्ज़ की वजह से सुच्ची बूटी के प्रयोग का इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात बहुत ही प्यारी और नाक़ाबिल फ़रामोश है।

*ज़ीशान ज़िया साहिब अपनी फ़ैमिली के साथ सेंट्रल वर्जीनिया से मुलाक़ात के लिए आए थे। बयान करते हैं कि हुज़ूर अनवर ने मुझसे मेरे कारोबार के बारे में पूछा और मुझे नसीहत फ़रमाई कि सारे कारोबारी मामलात को लिखा करूँ। हुज़ूर अनवर ने मेरी पत्नी को नसीहत फ़रमाई कि अगर तंगी है तो ख़र्चा कम कर लो। उनकी पत्नी बयान करती हैं कि हुज़ूर अनवर के चेहरा पर नूर ही नूर था।

*मन्सूर अहमद साहिब अपनी फ़ैमिली के साथ सेंट्रल वर्जीनिया से मुलाक़ात के लिए आए थे। कहते हैं कि मैं जितना भी ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करूँ कम है कि मुझे ख़लीफतुल मसीह के दर्शन का सौभाग्य नसीब हुई। मैं ट्रक ड्राईवर हूँ। हुज़ूर अनवर ने मुझसे मेरे पेशा के बारे में पूछा। हुज़ूर अनवर ने मुझे सिगरेट पीना छोड़ने की नसीहत फ़रमाई।

*एक दोस्त क़ाज़ी मुहम्मद अकबर साहिब की पत्नी बयान करती हैं कि हुज़ूर अनवर ने मुझसे पूछने फ़रमाया कि क्या आपने अपने पति को यहां बुलाने के लिए स्पांसर किया था। मैंने जवाब में निवेदन किया कि जी हुज़ूर। मैं ही उन्हें यहां लेकर आई थी। इस पर हुज़ूर अनवर ने मज़ाक में फ़रमाया कि फिर आप उनका वीज़ा हैं। उनके सुसर क़ाज़ी मुहम्मद असलम साहिब पाकिस्तान से हुज़ूर अनवर के लिए अमरीका आए थे। वह कहने लगे कि मैंने हुज़ूर अनवर से दरख़ास्त की कि में एक तस्वीर अलग भी बनवाना चाहता हूँ। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए मेरी दरख़ास्त क़बूल फ़रमाई।

अमरीका की जमाअतों के अतिरिक्त द्वीप के देश पोर्टो रीको से आने वाले नौ मुबाईन के वफ़द ने भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

*पोर्टो रीको से निम्नलिखित नौ मुबाईन पर आधारित वफ़द हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मुलाक़ात के लिए आया था। Miguel Caliz साहिब, Luis Perezसाहिब, Bernardo Beleno साहिब और Alejnadro Ismael Ali साहिब। इन सभी लोगों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ यह पहली मुलाक़ात थी। हुज़ूर अनवर ने सारी नौ मुबाईन से पूछा कि अहमदियत से पहले उनका मज़हब क्या था।

*इस पर Alejandro साहिब ने बताया कि वो बचपन से 8 साल की उम्र में ही इस्लाम की तरफ़ झुके थे और अहमदियत क़बूल करने से पहले सुन्नी थे।

*Luis Perez साहिब ने बताया कि वो इस्लाम से पहले ईसाईयत के फ़िर्क़ा प्रोटीसटनट के अनुयायी थे और इसके अतिरिक्त भी काफ़ी और धर्मों को follow करके अब इस्लाम अहमदियत में शामिल हुए।

*Bernardo Beleno साहिब ने बताया कि इस्लाम अहमदियत से पहले वह कैथोलिक और फिर प्रोटीसटनट थे। इस के बाद फिर सुन्नी इस्लाम क़बूल किया। मगर उनको वह पसंद नहीं आया क्योंकि उनका कोई ख़ास रुहानी लीडर नहीं है और अहमदियत इसी लिए क़बूल की है क्योंकि जमाअत में एक ख़लीफ़ा है और रुहानी लीडर है, जिस तरह कैथोलिकस में पोप है।

*Miguel Caliz ने बताया कि 2006 ई में रशीद अहमद साहिब अफ्रीकन अमरीकन अहमदी (Milwaukee जमाअत)की तब्लीग़ से अहमदियत क़बूल करके सिलसिला अहमदिया में दाख़िल हुए और महोदय Puerto Rico के पहले अहमदी भी हैं।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने Alejandro से पूछा कि उनकी अहमदियत क़बूल करने पर उनकी फ़ैमिली के विचार क्या हैं। तो इस पर Alejandro ने बताया कि उनकी फ़ैमिली उनके इस फ़ैसले से ख़ुश है और वे कहते हैं कि अगर तुम ख़ुश हो तो हम भी ठीक हैं।

*Luis Perez साहिब ने दरख़ास्त की कि हुज़ूर उनके लिए कोई इस्लामी नाम चुनें तो हुज़ूर अनवर ने उनके लिए महमूद नाम रखा।

*Bernardo Beleno (Bashir Salman) साहिब ने हुज़ूर अनवर की सेवा में और अधिक निवेदन किया कि पहले वह ईसाई थे और फिर उन्होंने इस्लाम क़बूल किया और सुन्नी मस्जिद में जाते थे। इस दौरान जमाअत स्पेन की तरफ से किसी ने मुझे क़ुरआन करीम का एक नुस्ख़ा बतौर तोहफ़ा भिजवाया जो मुझे बहुत ही पसंद आया। जब यह क़ुरआन लेकर सुन्नी मस्जिद गया तो उन्होंने कहा कि यह अहमदिया जमाअत का क़ुरआन है, ठीक नहीं है, इस को फेंक दो और हमारा क़ुरआन पढ़ो। इस पर मैंने स्पष्ट कह दिया कि तुम जो इच्छा करो मैं तो इसी क़ुरआन से पढ़ूँगा। इस के बाद मेरा सम्पर्क तारिक़ मुनइम साहिब इंचार्ज स्पेनिश डेस्क के साथ स्पेन में हुआ और तारिक़ साहिब ने मेरा सम्पर्क मुबल्लिग़ सिलसिला पोर्टो रीको से करवाया। इस तरह मैंने अहमदियत क़बूल की।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर ने Miguel Caliz साहिब से पूछा कि क्या काम करते हैं, तो उन्होंने बताया कि वो Data Analyst के तौर पर एक इंशोरंस कंपनी में काम करते हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदय ने निवेदन किया कि उनकी उम्र 38 साल है और उनकी अभी शादी नहीं हुई। इंशा अल्लाह अगले साल करने का इरादा है तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि शादी करें तो किसी मुसलमान औरत से करें और कोशिश करें कि अहमदी मुसलमान औरत से हो।

आख़िर पर वफ़द के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

*इस्माईल अली साहिब ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर से मुलाक़ात मेरी ज़िन्दगी का एक ख़ास अवसर था। मैं जैसे ही हुज़ूर अनवर के दफ़्तर में दाख़िल हुआ तो मुझे एक बहुत ही अच्छी और निहायत ही गर्म-जोशी वाली अवस्था महसूस हुई और मैंने अपने आपको अमन वाला और महफ़ूज़ जगह पर पाया। मैंने देखा कि हुज़ूर का व्यक्तित्व निहायत पुर सुकून है और हुज़ूर अनवर बहुत उच्च सोच के मालिक हैं। हुज़ूर की मुस्कुराहट बहुत ही दिल को लगने वाली है। मेरे लिए यह बहुत ख़ास और अलग तजुर्बा था। एक ऐसा तजुर्बा था जो कि नूर और हिक्मत से भरा हुआ था।

*एक दोस्त Berdanrdo Beleno जिनका इस्लामी नाम बशीर सुलेमान है वह बयान करते हैं: हुज़ूर अनवर अमन के सिपहसालार हैं और मुसलमानों के लिए हुज़ूर के दिल में बहुत दर्द है। मेरी इच्छा है कि हम इस्लाम को और अधिक सीखें और इस की वास्तविक शिक्षाओं के अनुसार ज़िन्दगियां गुज़ारें। हुज़ूर अनवर के लिए मेरे दिल में बहुत ज़्यादा इज़्ज़त और मुहब्बत है। हुज़ूर एक ख़ुदा के सच्चे ख़ादिम हैं और यह बात मैंने अपनी आँखों से देखी है।

*वफ़द में शामिल एक नई बैअत करने वाले अहमदी लवीज़पीरज़, जिनका इस्लामी नाम महमूद पीरज़ है, उन्होंने बयान किया: हुज़ूर अनवर से मेरी मुलाक़ात एक ऐसा तजुर्बा है जो मैं कभी नहीं भूल सकता। वह एक बहुत ही दिलनशीन तजुर्बा था। हुज़ूर एक बहुत ही ग़ैरमामूली व्यक्तित्व हैं। हुज़ूर अनवर के वजूद से ना सिर्फ कमरा रोशन था बल्कि वहां बहुत ज़्यादा अमन और सुकून महसूस होता था।

हुज़ूर की मुहब्बत और प्यार स्पष्ट तौर पर दिखाई दे रहा था। हुज़ूर को मिलने से मुझे अपनाईयत जैसी महसूस हुई और एक ख़ास ख़ुशी महसूस हुई कि अब मैं

अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी का हिस्सा बन गया हूँ। यह एक ऐसी अवस्था है जो मैंने दूसरी जमाअतों और कम्यूनिटीज़ को मिलते हुए कभी नहीं महसूस की।

हुज़ूर के अंदाज़ बयान से मुझे काफ़ी ख़ुद-एतमादी और जोश पैदा हुआ है। मेरे कम ज्ञान की वजह से मुझे पता नहीं था कि कैसे मैंने अपना इस्लामी नाम रखना है। हुज़ूर अनवर से पूछने पर हुज़ूर ने मेरा नाम महमूद तजवीज़ फ़रमाया। मैं इस नाम को बहुत ही ख़ुशी और गर्व से अपने साथ रखूंगा क्योंकि यह नाम मुझे हुज़ूर ने दिया है।

*मीगील कॉलेज़ साहिब ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर की राय बहुत ही सादी और सीधी महसूस हुई। हुज़ूर अनवर देखते ही बता देते हैं कि एक इन्सान कहाँ पर है और इस को कहाँ पर होना चाहिए। हुज़ूर से मुलाक़ात करके मुझे काफ़ी ज़्यादा ख़ुद-एतिमादी महसूस हुई और मेरे अंदर एक ज़िन्दगी पैदा हुई। मैं तो यही कहूँगा कि जब भी कोई भी इन्सान हुज़ूर से मिले तो हुज़ूर की ईमानी हरारत से ज़रूर फ़ायदा उठाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम रात 9 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

2 नवम्बर2018 ई (दिनांक जुम्अ:)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छ: बजे मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

आज जुमअतुल मुबारक का दिन था और अमरीका के इस सफ़र का यह आख़री जुम्अ: था। वाशिंगटन DC और इर्दगिर्द की क़रीबी जमाअतों के अतिरिक्त अमरीका भर की विभिन्न स्टेटस और दूरदराज़ की जमाअतों से जमाअत के लोगों बड़े लंबे और लम्बा फ़ासले तय करके नमाज़ जुम्अ: की अदायगी के लिए पहुंचे थे। लोगों की एक बहुत बड़ी संख्या जुम्मेरात की शाम तक मस्जिद बैयतुर्रहमान पहुंच चुकी थी।

अरकांसास,लोवाओर मियामी से आने वाले एक हज़ार मील से अधिक का सफ़र तय करके पहुंचे थे। डलास, कांसास,मिनसटव और होसटन की जमाअतों से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ 1300 मील से अधिक का सफ़र तय करके पहुंचे थे।

जबकि ऑस्टन और नॉर्थ डकोटा से आने वाले लोग पंद्रह सौ मील से अधिक का सफ़र तय करके पहुंचे थे। लास अंजलीज़ से आने वाले दो हज़ार छ: सौ मील,बे पाओनट और सयाटल से आने वाले दो हज़ार आठ सौ मील का सफ़र तय करके पहुंचे थे जबकि सिलीकॉन वैली से आने वाले लोगों दो हज़ार आठ सौ पच्चास मील और हवाई से आने वाले चार हज़ार आठ सौ मील का सफ़र जहाज़ द्वारा कर के लगभग दस घंटों में तय करके पहुंचे थे।

अमरीका के अतिरिक्त कैनेडा की विभिन्न जमाअतों से भी जमाअत के लोगों बहुत बड़ी संख्या में अपने प्यारे आक़ा की इक़तिदा में नमाज़ जुम्अ: की अदायगी के लिए पहुंचे थे। कैनेडा की जमाअतों कैलगरी से आने वाले 2300 मील और वेनकोवर से आने वाले 3000 मील का सफ़र जहाज़ द्वारा छ: घंटों से अधिक वक़्त में तय करके पहुंचे थे।

इस तरह कुल हाज़िरी साढ़े छ: हज़ार से अधिक थी। जिसमें कैनेडा से आने वालों की संख्या लगभग दो हज़ार के लगभग थी। नमाज़ जुम्अ: की अदायगी के लिए विभिन्न जगहों पर मार्की लगा कर बड़े व्यापक स्तर पर प्रबंध किया गया था।

ख़ुत्बा जुम्अ:

प्रोग्राम के अनुसार एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया।हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुम्अ: MTA इंटरनेशनल पर सीधा प्रसारित हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह पूर्ण ख़ुत्बा जुम्अ: साप्ताहिक अख़बार बदर में प्रकाशित हो चुका है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुम्अ: दो बजकर दस मिनट पर ख़त्म हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ अस्र जमा करके पढ़ाई।

बैअत का आयोजन

नमाज़ों की अदायगी के बाद बैअत के आयोजन हुई जो MTAके द्वारा दुनिया-भर में Live प्रसारित हुई। नई बैअत करने वाले अहमदी लोगों ने हुज़ूर अनवर के दस्त मुबारक पर हाथ रखा और नमाज़ जुम्अ: में शामिल होने वाले सारे मर्दो औरतों ने इस बैअत के आयोजन में शमूलीयत का सौभाग्य पाया। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद में लजना के हाल में तशरीफ़ ले गए और सारी औरतों को अस्सलामो अलैकुम कहा। औरत दर्शन से फ़ैज़याब हुईं। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े पाँच बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ की मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 72 फ़ैमिलीज़ के 317 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी लोगों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने शिक्षा प्राप्त करे वाले छात्र और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ अमरीका की निम्नलिखित नौ जमाअतों से आई थीं: डेट्रॉइट, आलाबामा, कैरोलीना,जॉर्जिया, लॉंग आइलैंड,मियामी,मिडल टाउन, कीवनसनी,विलिंग बोरो, सिलवर स्प्रिंग।

दौर की जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ 12 घंटे से अधिक का सफ़र तय करके आई थीं।

*आज मुलाक़ात करने वालों में कैनेडा से आने वाले एक मेहमान Chief Rodger Redman साहिब भी शामिल थे। महोदय कैनेडा की क़दीम अक़्वाम (Aborigines) के क़बीलों के एक चीफ़ हैं। उनका सम्बन्ध Standing Buffalo First Nation से है।

महोदय ने इस बात का की बार प्रकटन किया कि बहुत से लोगों को हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का अवसर नहीं मिलता लेकिन उन्हें आज हुज़ूर से मिलने का अवसर मिला है वह इस सौभाग्य पर बहुत ख़ुश हैं। महोदय ने हुज़ूर अनवर का ख़ुत्बा जुम्अ: सुनने और बैअत के आयोजन को देखने के बाद ख़ुत्बा जुम्अ: का अंग्रेज़ी अनुवाद सुनने की इच्छा ज़ाहिर की और इस के बाद कहा कि जो बरकतों वाले शब्द मैंने हुज़ूर अनवर के ख़ुत्बा में सुने हैं, इस की पूरी दुनिया को ज़रूरत है। ऐसी राहनुमाई और हिदायत सिर्फ उस शख़्स से ही मिल सकती है जो ख़ुदा तआला से राहनुमाई पाने वाला हो। अगर आज मेरी कम्यूनिटी के पास ऐसी राहनुमाई होती तो मुझे यक़ीन है कि हम भी आप लोगों की तरह एक मज़बूत और गर्व योग्य क़ौम होते।

बैअत के आयोजन में महोदय शामिल थे। अमीर साहिब कैनेडा बयान करते हैं कि बैअत के आयोजन के वक़्त कुछ परेशान नज़र आरहे थे जब उनको बताया गया कि इस्लाम में इस मामला में ज़बरदस्ती नहीं है। आप उस वक़्त बैअत करें जब आपका दिल मुतमइन हो। जब बैअत शुरू हुई तो उन्होंने बुलंद आवाज़ में रोना शुरू कर दिया। बाद में महोदय ने बताया कि इस माहौल में एक अजीब ताक़त थी जो उन्हें महसूस हुई और इस ताक़त ने उन्हें एक गर्व योग्य और मज़बूत क़ौम का एहसास दिलाया जिसका एक ऐसा सरबराह है जो उन की हर क़दम पर राहनुमाई करता है। मैं अपने आपको इस ताक़त के साथ एक होने से रोक ना पाया।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 7 November 2019 Issue No. 45

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

चीफ़ की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात ने उन पर एक गहरा असर छोड़ा। चीफ़ ने कहा कि हुज़ूर अनवर भरपूर दया और मुहब्बत के साथ मिलते हैं और सरबराहान और लीडर्ज़ के साथ बहुत अच्छी तरह पेश आते हैं। महोदय ने कहा कि हमारी क़ौम इस बात का ख़ूब ख़्याल रखती थी कि वह अपने बुज़ुर्गों और चीफ़स से सम्मान से पेश आती थी। लेकिन जब से यूरोपीयन लोग उत्तरी अमरीका में आए हैं हमारी क़ौम यह सब अख़लाक़ खो बैठी है। लेकिन मैंने आज देखा है कि हुज़ूर अनवर इन अख़लाक़ को दोबारा ज़िन्दा कर रहे हैं।

चीफ़ ने कहा कि हुज़ूर अनवर एक बहुत शफ़ीक़ इन्सान हैं। हुज़ूर अनवर ने मुझ से मेरी क़ौम की भलाई के बारे में पूछा। हुज़ूर अनवर को सियासत इत्यादि में कोई दिलचस्पी नहीं थी बल्कि हुज़ूर अनवर ने मुझसे मेरी क़ौम के बारे में सवाल किए। मेरी क़ौम में एक मुहावरा पाया जाता है कि जो चीफ़ होते हैं वह क़ौम के ग़ुलाम होते हैं। हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात के दौरान मुझे यह मुहावरा याद आया क्योंकि हुज़ूर अनवर मुझे इस बात के आईना दिखाने वाले नज़र आए। हुज़ूर अनवर ने मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस से आगाह किया जिसमें आप ने फ़रमाया कि क़ौम का सरदार क़ौम का ख़ादिम होता है।

चीफ़ Rodger Redman ने जमाअत और ख़िलाफ़त से भरपूर सम्मान और अक़ीदत का प्रकटन किया और हुज़ूर अनवर की नसीहतों से बहुत प्रभावित हुए। महोदय ने कहा कि अब उनकी इच्छा है कि उनकी क़ौम का हर आदमी जमाअत अहमदिया की शिक्षाओं से आगाह हो। चीफ़ ने नियमित जमाअत से दर-ख़ास्त की है कि जमाअत उनके बच्चों और कम्यूनिटी के लोगों को जमाअत का परिचय करवाने में उनकी मदद करे, उनके बच्चों की तरबियत करने में मदद करे। चीफ़ ने कहा कि उन्होंने देखा है कि अहमदी लोग हुज़ूर अनवर की तरबियत के नतीजा में उच्च अख़लाक़ के मालिक हैं।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम नौ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए। आदरणीय मुनीरुद्दीन शमस साहिब मैनेजिंग डायरेक्टर MTA इंटरनेशनल, आदरणीय मुनीर ऊदा साहिब डायरेक्टर प्रोडक्शन और आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब अमीर जमाअत यू एस ए ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से साझी मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया और MTA अर्थ स्टेशन अमरीका के साथ जुड़े प्लाट में MTA स्टूडियो की बुनियाद के बारे में प्रोग्राम और प्लैनिंग पेश करके हिदायतें और राहनुमाई प्राप्त की।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने प्रोग्राम के अनुसार आदरणीय तलहा अहमद साहिब वाक़िफ़ ज़िन्दगी की दावत वलीमा में शमूलीयत फ़रमाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

03 नवंबर2018 ई (दिनांक हफ़्ता)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े छः बजे मस्जिद बैयतुर्रहमान में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाईं और हिदायतों से नवाज़ा।

प्रोग्राम के अनुसार ग्यारह बज कर पैंतीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए। सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमिदया यू एस ए आदरणीय अदील अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया और हुज़ूर अनवर से हिदायते और रहनुमाई प्राप्त की। महोदय इस साल मजलिस ख़ुद्दामुल अहमिदया यू एस ए के नए सदर मुक़र्रर हुए हैं। यह मुलाक़ात बारह बजे तक जारी रही। इस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

लिपिक के तौर पर ख़िदमत के इच्छुक लोग ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में मुहर्रिर के तौर पर ख़िदमत के इच्छुक लोगों की सूचना के लिए तहरीर है कि

(1)उम्मीदवार की उम्र 25 साल से कम होनी ज़रूरी है और उम्मीदवार की शिक्षा कम से कम 10+2 सैकिण्ड डवीज़न में और कम से कम 45% प्रतिशत नंबर हासिल किए हों। इस से अधिक शिक्षा होने की अवस्था में भी कम अज़ से सैकिण्ड डवीज़न या इस से अधिक नंबर हों।

(2)जामिआ अहमदिया कादियान के छात्र जो मैट्रिक पास करने के बाद जामिया अहमदिया में कम से कम दो साल शिक्षा हासिल करके परीक्षा में कामयाब हो गए हूँ मुकर्रम प्रिंसिपल साहिब जामिआ अहमदिया की तसदीक़ तथा सिफ़ारिश के बाद नियमों के अनुसार दर्जा दोयम की परीक्षा में शामिल हो सकते हैं।

(3)उम्मीदवार का अच्छी लिखाई वाला होना लाज़िमी होगा और उर्दू Inpage कम्पोज़िंग जानना और टाइपिंग रफ़्तार कम से कम 25 शब्द प्रति मिनट होनी चाहीए।

(4)सिर्फ वे उम्मीदवार ख़िदमत के योग्य होंगे जो सदर अंजुमन अहमदिया की तरफ़ से मुहर्रिरीन के लिए लिए जाने वाली परीक्षा और इंटरव्यू में पास होंगे।

(5)जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में बतौर मुहर्रिर ख़िदमत के इच्छुक हों और ऊपर लिखी शर्तों पर पूरा उतरते हों वे दरख़ास्त दे सकते हैं। दरख़ास्त फ़ार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से मंगवा लें। अपनी दरख़ास्त फ़ार्म को पूर्ण करके नज़ारत दीवान में भिजवा दें। दरख़ास्त फ़ार्म मिलने पर इमतिहान का आयोजन किया जाएगा। इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो दरख़ास्तें आयेंगी उन्हीं पर विचार होगा।

(6)निसाब इमतिहान कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोयम के हर भाग में कामयाब होना लाज़िमी है जो निम्नलिखित है। क़ुरआन करीम नाज़रा मुकम्मल, पहला पारा अनुवाद सहित, चालीस जवाहर पारे , अरकान इस्लाम, नमाज़ मुकम्मल अनुवाद सहित, कशती नूह, बरकातुद्दुआ, दीनी मालूमात, मज़मून बाबत अक़ायद जमात अहमदिया , नज़म दुर्रेसमीन (शान इस्लाम) अंग्रेज़ी बमुताबिक़ मयार इंटरमीडीयेट 10+2) हिसाब बमुताबिक़ मयार मैट्रिक , आम मालूमात।

(7)लिखित परीक्षा में सफल होने वालों का इंटरव्यू होगा। ख़िदमत के लिए इंटरव्यू में कामयाबी लाज़िमी है।

(8)लिखित परीक्षा तथा इंटरव्यू दोनों में कामयाबी की अवस्था में उम्मीदवार को नूर हस्पताल कादियान से तिब्बी परीक्षण करवाना होगा और सिर्फ वही उम्मीदवार ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे।

(9)अगर किसी उम्मीदवार की जमाअत की किसी आसामी में स्लैक्शन होती है तो इस अवस्था में इस को कादियान में अपनी रिहायश का इंतिज़ाम ख़ुद करना होगा।

(10)सफ़र ख़र्च कादियान आने जाने के उम्मीदवार के अपने होंगे।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कर सकते हैं।

(नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान)

मोबाइल9877138347,9646351280 दफ़्तर01872-501130

E-mail: diwan@qadian.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad